पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका पी एण्ड एस बैंक

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाऊस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 008

सितंबर, 2011

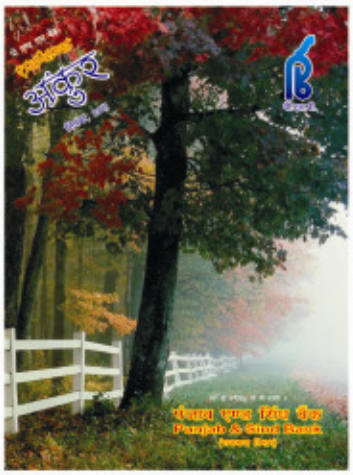

मुख्य संरक्षक

श्री पी. के. आनन्द

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री पी. एस. घावरी

मुख्य महाप्रबंधक

संपादक

श्री दीन दयाल शर्मा

सहायक महाप्रबंधक

प्रकाशक

डॉ. चरनजीत सिंह

वरिष्ठ प्रबंधक एवं प्रभारी,

राजभाषा विभाग

संपादक मंडल

श्री कंवर अशोक

प्रबंधक

श्री कुलदीप सिंह खुराना

प्रबंधक

पंजीकरण सं. : फा 2(25) प्रैस. 91

राजभाषा अंकुर में प्रकाशित सामग्री में दिये गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र,
नई दिल्ली-110015 फ़ोन : 9810087743

विषय – सूची

आप की कलम से	2
संपादकीय	3
वित्त-मंत्री का संदेश	4
गृह-मंत्री का संदेश	5
कार्यकारी निदेशक का संदेश	6
बढ़ते ब्याज का प्रभाव	7
बैंकिंग उद्योग में हिंदी की सार्थकता / अभिलाषा	8
कायर नहीं था मैं / जीवन रचना की व्याख्या	10
ढाई आखर प्रेम के	12
सतर्कता, भ्रष्टाचार और हम	13
"र" से राजनीति	14
नई शाखाएँ	16
नए ए.टी.एम. का शुभारंभ	20
प्र.का. स्तर पर आयोजित हिंदी दिवस समापन समारोह	22
आ.का. स्तर पर आयोजित हिंदी दिवस समारोह	24
राजभाषा समाचार	26
आंचलिक कार्यालय स्तर पर आयोजित हिंदी कार्यशालाएँ	28
हिंदी/पंजाबी कार्यशालाएँ	30
शाखाओं का स्थानांतरण	31
हमें इन पर गर्व है	32
उपलब्धियाँ	33
गतिविधियाँ	34
वित्तीय समावेशन कार्यक्रम	36
ए.टी.एम.-फ्रॉड से कैसे बचें?	37
कमर-दर्द को करें परास्त	38
मन-मंथन	40
व्यवसायिक सिनेमा में दलित चेतना का उद्भव	41
हमारे चित्रकार	43
सेवा-निवृत्तियाँ	44

आप की कलम से

आपके द्वारा प्रेषित गृह-पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के मार्च 2011 अंक की प्राप्ति हुई। तदर्थ धन्यवाद। बैंक का व्यवसाय ₹ 1.00 लाख करोड़ से अधिक होने पर हार्दिक बधाई। पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं रचनाएं बहुत प्रेरक हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रकाशित बैंक की विभिन्न गतिविधियां एवं अन्य योजनाबद्ध जानकारी उपयोगी एवं स्तरीय है। राजभाषा अंकुर का स्तर निरंतर निखरता जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई।

कृष्ण मोहन मिश्र
सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आ.का., दिल्ली

हमें आपकी गृह-पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का मार्च 2011 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। सर्वप्रथम बैंक द्वारा नई बुलंदियों को छूने के लिए आपको ढेर सारी शुभकामनाएं। 'रुपए का नया प्रतीक चिन्ह' एवं 'विशिष्ट पहचान संख्या (यूआईडी)' काफ़ी रोचक, ज्ञानवर्धक, एवं संग्रहणीय लेख हैं। लेख 'रोज़गार प्राप्ति के नए अवसर एवं राजभाषा का परिवर्तित होता स्वरूप' देश में हो रही हिंदी की दुर्दशा का सही चित्र प्रस्तुत करता है। आगामी अंकों के लिए हमारी शुभकामनाओं सहित।

अमर सिंह सचान
राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली

We thank you for your "Rajbhasha Ankur".It was a great pleasure going through the issue, We note to reciprocate the same, with our issues as well.

भानु रमन
महाप्रबंधक एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी
केनरा बैंक, प्र.का. बैंगलूर

आप द्वारा प्रकाशित व भेजा गया मार्च 2011 का अंकुर का अंक प्राप्त हुआ। कहानी 'कर्म-फल' अच्छी लगी और मनोहर सिंह बतरा का लेख 'श्री गुरू नानक देव जी' पढ़ने व समझने लायक है। हमारी तरफ से इस अंक के लिए आप व आपके स्टाफ़ को हार्दिक बधाई।

वी. एस. बीर
मुख्य सम्पादक, महरम पब्लिकेशन्स, नाभा.

राजभाषा अंकुर पत्रिका (मार्च 2011) प्राप्त कर एवं पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशित सम्पादकीय से लेकर समग्र सामग्री व्यवसायिक, सामाजिक, आर्थिक व आध्यात्मिक सरोकारों का बख़ूबी प्रतिनिधित्व करती है।

रामेश्वर दयाल (आई.पी.एस.)
अपर पुलिस महानिदेशक (से.नि.)
गोमती नगर, लखनऊ

पत्रिका 'अंकुर' मिली। देखकर और पढ़कर अच्छा लगा। ख़ासतौर पर 'श्री अमृतसर सिफ़्ती का घर', 'नेकी कर कुएं में डाल', 'काका.....मेरा मोबाइल खो गया है', सराहनीय हैं। मनोहर सिंह बतरा द्वारा लिखित, 'श्री गुरू नानक देव जी का सामाजिक दर्शन' ज्ञानवर्धक है। सभी नन्हें-चित्रकारों ने तो कमाल ही कर दिया। मास्टर भवसिमरन सिंह का चित्र देखकर मकबूल फ़िदा हुसैन की याद आ गई। आपने अंकुर का स्तर ऊपर उठाया है, इसके लिए बधाई।

उपदेश सिंह सचदेवा
सहायक महाप्रबंधक (से.नि.)

मैं आपके बैंक द्वारा प्रकाशित 'पी एण्ड एस बैंक राजभाषा अंकुर' का एक नियमित पाठक हूँ। उत्कृष्ट साज-सज्जा एवं आकर्षक आवरण-पृष्ठ के साथ पत्रिका में प्रस्तुत अन्य सामग्री भी अत्यंत उपयोगी एवं स्तरीय है। मैं समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. अमरदीप सिंह
मनोविश्लेषण चिकित्सक एवं काउंसलर
हरि नगर, नई दिल्ली

This is with reference to the Magazine "RAJBHASHA ANKUR, for the month of March 2011" sent by you, I would like to express my gratitude for your kind gestures and also wishing you congratulations from the core of my heart.

महेश कुमार गुप्ता
चार्टड एकाउंटेट, नई दिल्ली

मार्च 2011 की पत्रिका 'अंकुर' सभी गुणों से भरपूर है। रूपए के स्वरूप के बारे में इतना रहस्य छुपा है, यह आपने पाठकों तक पहुँचाकर पत्रिका में चार चाँद लगाने का काम किया है। बैंक की विभिन्न गतिविधियाँ जैसे नई शाखाओं के छाया-चित्र, विभिन्न गोष्ठियों द्वारा बैंक की गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाकर आपने सभी पत्रिका पढ़ने वालों का मन मोह लिया। बच्चों द्वारा निर्मित चित्र, कार्टून अति सुंदर हैं एवं मन को मोहने वाले हैं।

बलवीर सिंह सैनी
सहायक महाप्रबंधक
आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'पी एण्ड एस बैंक राजभाषा अंकुर' का मार्च 2011 का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रस्तुतीकरण से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। पत्रिका के इस अंक के सभी लेख बहुत ही जानकारी परक हैं। इस पत्रिका को देखकर लगता है कि संपादक मंडल ने इसके प्रकाशन में बहुत लगन एवं मेहनत से कार्य किया है। इसके लिए मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ।

डॉ रमनदीप सिंह
फ़ीज़ियोथेरेपिस्ट, नारायणा, नई दिल्ली

आपका बैंक हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उत्तम कार्य कर रहा है। पत्रिका का मुद्रण उच्च-कोटि का है। लेख एवं सामग्री पठनीय हैं।

वेद प्रकाश वर्मा
पूर्व प्रवक्ता, पटपड़ गंज, दिल्ली-110092

संपादकीय

मेरे साथियो,

सर्वप्रथम, आप सब को 'राजभाषा दिवस' की हार्दिक शुभ-कामनाएं।

साथियो! जब तक यह अंक आपके हाथों में आएगा 'हिंदी पखवाड़ा' समाप्त हो चुका होगा लेकिन मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी प्रतियोगिताओं की गहमा-गहमी निश्चय ही आपको राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए आज भी प्रेरित कर रही होगी। बैंक का हिंदी के प्रति बेहतर कार्य हमारे कर्मठ और उत्साही स्टाफ़-सदस्यों के निश्चय के कारण ही संभव हुआ है। आशा करता हूँ कि आप हिंदी में किए जा रहे कार्यों को उसी प्रकार से करते रहेंगे, जिस प्रकार आप बैंकिंग के अन्य कार्यों को कार्यान्वित कर रहे हैं।

हम ऐसे व्यवसाय में काम कर रहे हैं जहाँ हमें अपने ग्राहक, जो समाज के अलग-अलग वर्गों से आते हैं, के साथ परस्पर सीधा संबंध बनाना होता है। हमारी सफलता ग्राहकों की संतुष्टि पर निर्भर करती है। किसी भी बैंक को बनाने तथा शिखर तक पहुँचाने के लिए ग्राहक-सेवा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने मूल्यवान ग्राहकों के साथ अच्छे संबंध बनाना वास्तव में एक कला हैं। हमें इस कला को अपने भीतर विकसित करना है। हमें पूर्ण विश्वास है कि इससे हमें अपने ग्राहक-वर्ग को बढ़ाने में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

इसके लिए हमें अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को सक्रिय करना होगा, क्योंकि जीवन केवल चलने का नाम है। जब तक हम सक्रिय हैं हम ज़िंदा हैं और जब हम निष्क्रिय हो जाएंगे तो हमारा जीवन ही समाप्त हो जाएगा।

एक व्यक्ति को पहाड़ों पर चढ़ने का बड़ा शौक़ था। वह अपने इस जुनून को ठंड के मौसम में भी रोक नहीं पाता था। एक बार वह ठंड के दिनों पहाड़ पर चढ़ रहा था, तभी एकाएक बर्फ़ के तूफ़ान ने उसे घेर लिया। उसने मदद के लिए पुकारा और उसे तुरंत ही सहायता का आश्वासन भी प्राप्त हो गया। अब उसे अपने को तब तक ज़िंदा रखना था, जब तक कि मदद उस तक पहुँच नहीं जाती। दूसरी और तूफ़ान था कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। इसी कारण मदद आने में देरी हो रही थी। लेकिन वह व्यक्ति अपने को असहाय समझ कर निष्क्रिय होने के स्थान पर अपने को उस थोड़ी सी जगह में निरंतर हिलाने-डुलाने लगा ताकि वह बर्फ़ में जमने से बच जाए। उसका हिलने-डुलने का यह प्रयास ही उसका जीवन-दाता बना।

इसलिए, दोस्तो चौकन्ने और सक्रिय रहो तथा नव-शक्ति के साथ डट जाओ ताकि हम अपनी प्रिय संस्था को ''ग्राहकों हेतु बैंक'', ''ग्राहकों के साथ बैंक'' बना सकें।

पिछले कुछ समय से हमें अपने पाठकों तथा स्टॉफ़-सदस्यों से काफ़ी मात्रा में उनके आलेख तथा अन्य प्रकाशन योग्य सामग्री प्राप्त हो रही है। इसके अतिरिक्त पत्रिका के पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं द्वारा भी इस पत्रिका को तिमाही आधार पर प्रकाशित किए जाने के अनुरोध प्राप्त हुए हैं। इनके आधार पर बैंक के उच्चाधिकारियों द्वारा निर्णय लिया गया है कि इसे आगामी वित्तीय-वर्ष से तिमाही आधार पर प्रकाशित किया जाए।

इस संबंध में मेरा आपसे अनुरोध है कि आप विभिन्न विधाओं पर लिखे अपने आलेख, कविताएं, संस्मरण, कहानियाँ आदि हमें प्रेषित करते रहें ताकि हम अपने सुधि पाठकों को एक सुपठनीय पत्रिका प्रस्तुत करते रहें।

बैंक के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों तथा शाखाओं द्वारा हिंदी-दिवस समारोह के आयोजन के सचित्र प्रस्तुतिकरण, हिंदी कार्यशालाओं तथा अन्य हिंदी संबंधी गतिविधियों के अतिरिक्त स्तरीय लेखों और बैंक द्वारा खोली गई नई शाखाओं की सूचना व अन्य गतिविधियों के साथ हम यह नया अंक लेकर फिर से उपस्थित हैं। इस पत्रिका पर हमें आपकी प्रतिक्रियाएं तथा सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

आपके सहयोग की प्रत्याशा में।

एक बार फिर से मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

परमजीत घावरी

(परमजीत सिंह घावरी)

मुख्य महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

प्रणब मुखर्जी
PRANAB MUKHERJEE

वित्त-मंत्री, भारत
FINANCE MINISTER
INDIA

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया है। यह देश में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाने वाली भाषा है। यह हमारे महान राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता और एकता व अखण्डता का प्रतीक है। हिंदी भाषा आज एक विश्व भाषा के रूप में पहचान बना रही है।

हमारा देश चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर है। भारत आज विश्व की तेज़ी से विकसित होती आर्थिक ताकत है। भारतीय लोकतंत्र की सामाजिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय तरक्की में आम जनता की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने तथा शासन को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने में हिंदी व भारतीय भाषाओं की अहम भूमिका है। इन भाषाओं को हमें अधिक से अधिक प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से जोड़ना होगा।

हिंदी दिवस के अवसर पर मैं वित्त–मंत्रालय तथा इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों, उपक्रमों आदि के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग करें। बैंकों, वित्तीय संस्थाओं व बीमा कंपनियों से मैं विशेष रूप से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने व्यावसायिक हितों को बढ़ाने में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को तरजीह दें।

प्रणब मुखर्जी.

(प्रणब मुखर्जी)

Office : Room No. 134, North Block, New Delhi-110001 Ph. : 23092810, 23092510 Fax : 23093289
Residence : 13, Talkatora Road, New Delhi Tel. : 23737623, 23323042, 23737658

सत्यमेव जयते

पी. चिदम्बरम
P. CHIDAMBARAM
गृह–मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

हिंदी दिवस के पावन अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक मंगलकामनाएं।

हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 1949 के उस स्मरणीय और ऐतिहासिक दिन की याद आना स्वाभाविक है, जब देश के विशाल जनसमूह में हिंदी भाषा के प्रयोग एवं इस भाषा की सम्पन्नता को देखते हुए, हमारे संविधान-निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया था। फलस्वरूप राजभाषा नीति के जिस स्वरूप की संरचना हुई वह संघीय, लोकतांत्रिक, संतुलित, समावेशीय और भाषा-निरपेक्ष स्वरूप है जो संविधान में निहित मूलभूत सिद्धांतों के अनुरूप है। इस नीति ने देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने देश की सामासिक संस्कृति का पोषण किया है।

अब निरंतर रूप से यह धारणा दृढ़ हो रही है कि एक से अधिक भाषाओं में अपनी बात कह सकने की क्षमता आज के समय की मांग है। आज के प्रबल प्रतिस्पर्द्धा के युग में व्यक्तिगत-विकास, व्यावसायिक गतिशीलता और भाषायी सह-अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि हमें हिंदी का भी उतना ही अच्छा ज्ञान हो जितना कि प्रान्तीय और अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं का। सहज, सरल और बोलचाल की हिंदी ही समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों में लोकप्रिय होगी, और सतत् व स्थायी रूप से और अधिक विशाल क्षेत्र में प्रयोग में लायी जाएगी।

आज के समय में हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी में निकट और सहजीवी संबंध विकसित होने की आवश्यकता है ताकि हमारे देश के नागरिक विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान के विपुल भण्डार का लाभ उठा सकें। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राजभाषा विभाग ने हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी के बीच सहयोगपूर्ण संबंधों के महत्व को पहचाना है। तदनुसार इस विभाग ने विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और संगठनों से हिंदी भाषी जनता के हित में द्विभाषीय 'सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन्ज' के विकास का अनुरोध किया है और इस विषय का निरंतर अनुसरण कर रहा है।

केन्द्र सरकार ने हिंदी के प्रसार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इनमें जो उपलब्धियां विशेषकर उल्लेखनीय हैं, वे हैं - नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की तेज़ गति से स्थापना, हिंदी के प्रति और अधिक जागरूकता उत्पन्न करने के लिए इसके प्रसार-अभियान हेतु पर्याप्त संसाधनों का प्रावधान, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान (सी.एच.टी.आई.) और केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (सी.टी.बी.) में व्यवस्थापरक सुधार, तथा विभाग के वेबसाईट (जिसका पता www.rajbhasha.nic.in और www.rajbhasha.gov.in है) को अधिक सूचनापरक, सामयिक और नागरिक-उपयोगी बनाना। हिंदी का अधिक प्रभावी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए केन्द्रीय सरकार 12वीं पंचवर्षीय योजना (जो वर्ष 2012-13 से आरंभ हो रही है) में हिंदी का प्रसार हेतु सर्वपक्षीय रणनीति बनाए जाने की महत्ता से भली-भांति अवगत है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत बने राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के प्रशासनिक प्रमुखों की है। उनसे यह भी अपेक्षा है कि वे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त और प्रभावी जांच-बिन्दु बनाएं। मैं सभी प्रशासनिक प्रमुखों से आह्वान करता हूँ कि वे इस संबंध में अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करें। हिंदी दिवस के अवसर पर मैं आपको इस दिशा में सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिंद।

पी. चिदम्बरम

(पी. चिदम्बरम)

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2011

कार्यकारी निदेशक का संदेश

सर्वप्रथम आप सब को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को 14 सितंबर 1949 को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसीलिए सरकारी कार्यालयों में इस दिन को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद जब से राजभाषा विभाग की स्थापना हुई है, 'हिंदी दिवस समारोह' आयोजन बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष सितंबर माह के दौरान 'हिंदी पखवाड़े' का आयोजन कर राजभाषा विभाग द्वारा अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का प्रयोजन केवल इतना है कि इनके द्वारा सरकारी कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी में काम करने के लिए जागरुकता पैदा की जाए।

पिछले कुछ समय से हिंदी की पहुँच के अधिक व्यापक होने के कारण आज विज्ञापनों में हिंदी का प्रयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई तक्नीक् विकसित हो रही है। लोगों को महत्वपूर्ण जानकारी और ज्ञान उपलब्ध करवाने में वेबसाइटों की भूमिका उल्लेखनीय है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेज़ी से हो रही प्रगति का पूरा लाभ हिंदी प्रयोगकर्ता तक पहुँचाने के लिए आवश्यक है कि कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के मानक भाषा यानी यूनिकोड का प्रयोग किया जाए।

मेरा ऐसा मानना है कि हिंदी में काम करना बहुत सरल है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वरिष्ठ अधिकारी मूल रूप से हिंदी में काम करके अन्य कर्मचारियों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें और कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाएं।

मैं आप सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देता हूँ और आह्वान करता हूँ कि आप सभी अपने दैनिक काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं ताकि पंजाब एण्ड सिंध बैंक, बैंकिंग क्षेत्र के साथ-साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित कर सके।

पी. के. आनन्द
कार्यकारी निदेशक

बढ़ते ब्याज का प्रभाव

कामेश सेठी

यदि पिछले कुछ महीनों का आकलन करें तो हम पायेंगे कि बैंकिंग उद्योग में बहुत तेज़ी से ब्याज-दरों में वृद्धि हुई है। कुछ महीनों में ब्याज-दरें न केवल सावधि जमा में बल्कि ऋण में भी बहुत अधिक बढ़ गई हैं। पिछले एक वर्ष में तो यह लग रहा था जैसे बैंकों में ब्याज बढ़ाने की कोई प्रतियोगिता चल रही है। अब इस गति को देख कर एक प्रश्न उठता है कि आख़िर बढ़ते-बढ़ते ये दरें जा कर कहाँ रुकेगी? ये तो शायद कोई नहीं बता सकता, हाँ इसके प्रभाव का विश्लेषण अवश्य किया जा सकता है।

तो आईये! देखते हैं कि बैंकिंग उद्योग में इसका क्या असर हो सकता है? सर्वप्रथम सावधि जमा में अधिक ब्याज-दर बैंकों के लाभ को कम करता है। सभी बैंक अधिक ब्याज दे कर ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, लेकिन जितने ही अधिक ब्याज-दर पर ये जमा लिया जायेगा उतना ही उस बैंक का लाभ कम होगा यही नहीं उन्हें अपने ऋण पर उतना ही अधिक ब्याज-दर रखना पड़ेगा, जिससे ऋण लेने वाले ग्राहक दूर भागेंगे। अर्थात् जमा वाले ग्राहक अंदर और ऋण लेने वाले ग्राहक बाहर। परिणाम बैंकों को कम लाभ या हानि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

बढ़ती ब्याज-दर का सबसे बुरा असर तब पड़ेगा जब ऋणी अधिक ब्याज-दर के कारण बैंकों का ऋण वापस करने में कठिनाई का सामना करेंगे और बैंकों में एन.पी.ए. बढ़ने शुरू हो जायेंगे। यदि यही स्थिति रही तो ऋणों पर ब्याज-दर 19 प्रतिशत तक हो जाएगी और ऋणियों की जेबों पर भारी दबाव पड़ेगा और ऋणी, ऋण वापस करने में असमर्थ हो जायेंगे, फलतः बैंकों में एन.पी.ए. खातों की संख्या सीमा से बाहर हो जायेगी जिससे बैंकों को भारी हानि हो सकती है। हानि से बचने के लिए बैंकों को सी.ए.एस.ए. का सहारा लेना पड़ेगा और यदि बचत खाते पर रिज़र्व बैंक ने नियंत्रण हटा लिया तो बैंकों को और मार पड़ेगी। बैंकों को पहले ही बचत खाते में प्रतिदिन बैलेंस के आधार पर ब्याज देने से भारी नुकसान हो रहा है, हालांकि ग्राहकों को फ़ायदा हुआ है। लाभ में कमी का प्रभाव हमेशा कर्मचारियों पर पड़ता है। घटते लाभ के कारण बैंक, कर्मचारियों पर दबाव बनायेंगे और बैंकों को छटनी या तनख़्वाह में कटौती का सहारा लेना पड़ेगा।

ये तो था बढ़ती ब्याज-दरों का बैंकों पर प्रभाव। अब देखते हैं अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव :-

सावधि जमा पर ब्याज-दर में वृद्धि से सबसे ज्यादा फ़ायदा पहुँचता है- वरिष्ठ नागरिकों को, जिनके पास साधारणतः बैंकों के ब्याज या पेंशन के अलावा जीविका चलाने का कोई और दूसरा साधन नहीं होता। सभी जमाकर्ता ब्याज-दर बढ़ने से खुश होते हैं और महँगाई को रोकने के लिए इससे बड़ा हथियार और क्या हो सकता है? इस का सबसे बड़ा उदाहरण है कि यदि आज सावधि जमा पर 20 प्रतिशत ब्याज कर दिया जाए तो दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों में घरों की कीमतें एवं सारे देश में सोने-चांदी की कीमतें आधी रह जायेंगी।

दूसरी तरफ यदि ऋण पर ब्याज-दर 25 प्रतिशत कर दिया जाए तो लगभग 60 प्रतिशत उद्योग सीधे प्रभावित होंगे और अधिकतम उद्योगों पर तालाबंदी की नौबत आ जायेगी और लाखों लोग बेरोज़गार हो जायेंगे। और तो और बैंक भी बंद होने की कगार पर आ खड़े होंगे और सारी अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगी। बढ़ती ब्याज-दर अर्थ-व्यवस्था में 'सुनामी' भी ला सकती है, ये ग़ौर करने की बात है।

- शाखा जमशेदपुर, साकची

पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ़ सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ, बाल-कविताएँ, स्केच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहुआयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता सुझाव एवं प्रतिक्रिया सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य संपादक
पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग
21. राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

बैंकिंग उद्योग में हिंदी की सार्थकता

जे. एस. ढींगरा

भारत में बैंकों का वित्तीय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। बैंकों ने किसी अन्य विकासशील देश की तरह भारत के आर्थिक विकास में एक केंद्रीय भूमिका अदा की है। भारतीय बैंकिंग व्यवस्था का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस देश में बैंकिंग के दो युग बीत चुके हैं और यह तीसरे युग में प्रवेश कर चुका है। प्रथम युग राष्ट्रीयकरण से पूर्व, द्वितीय युग राष्ट्रीयकरण (1969) के उपरांत का रहा जबकि वर्तमान यानि तृतीय युग की शुरूआत 1991 में वित्तीय सुधारों एवं उदारीकरण की नीतियों के साथ हुई।

21वीं सदी के खुले वातावरण की यह तस्वीर, सूचना-प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रांति से उत्पादित एक नई बैंकिंग व्यवस्था की है, जो इंटरनेट एवं संचार के नवीनतम साधनों के माध्यम से संचालित हो रही है। आज का युग पूरी तरह इलेक्ट्रोनिक बैंकिंग को समर्पित है और हम धीरे-धीरे ब्रांच लेस बैंक एवं पेपरलेस बैंकिंग की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। हमारा आज का युग लंबी कतारों में खड़े होकर, खीजते हुए बैंक से पैसे निकालने की विवशता को नकारते हुए, ए.टी.एम. से निकाले हुए नोटों पर यक़ीन करता है। ई-कॉमर्स की दुनिया में हर व्यवसायी आज 'वर्ल्ड वाइड वेब' के जरिये उत्पाद की झलक दिखा-दिखा कर उपभोक्ताओं को लुभा रहा है एवं आर्डर बुक कर रहा है। इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग व्यवस्था विपणन, विज्ञापन और विक्रय ही नहीं बल्कि इन सब के भुगतान और वसूली की प्रक्रिया को भी बख़ूबी निभा रही है।

बैंकिंग का बदलता स्वरूप 'ग्राहक सेवा' की परिभाषा को 'ग्राहक संतुष्टि' को कहीं पीछे छोड़ते हुए 'ग्राहक आह्लाद' तक ले जा चुका है। आज बैंक अपनी ज़रूरतों के अनुसार विक्रय नहीं बल्कि ग्राहकों की आवश्यकता के अनुरूप विपणन बढ़ा रहे हैं। बैंकिंग के बदलते स्वरूप में सीमित कार्य अवधि की व्यवस्था को पलट दिया हैं एवं 24x7 बैंकिंग के लिए तैयार हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में बैंक 'टिके रहो या मिट जाओ' के युग में प्रवेश कर चुके हैं, जहाँ टिके रहने के लिए भी लगातार दौड़ते रहना ज़रूरी है। आज संचार साधनों की बदौलत देशों और स्थानों की दूरियां मिट चुकी हैं। संपूर्ण विश्व मानों एक गाँव बन गया है, जिसमें कभी भी, कहीं भी, किसी से तत्काल संपर्क स्थापित हो सकता है। वैश्वीकरण अर्थात् ग्लोबलाइज़ेशन इन सभी बातों का नतीजा है, जिससे एक नये तरह का बाज़ार व्यवस्था विकसित हुआ है, ज़रूरत सिर्फ़ अपेक्षित साधनों की है।

इस बदलते परिदृश्य में एक सच आज भी अपनी जगह कायम है कि बैंकिंग के प्रत्येक कार्य-कलाप का केंद्र बिन्दु है-हमारा ग्राहक। बैंक कई तरह की योजनाएं बनाकर ग्राहकों को अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। योजनाबद्ध सेवाओं को उत्पाद भी कहा गया है। बैंक के उत्पाद, ग्राहकों तक पहुँचाना और उन्हें स्वीकार्य बनाना ही बैंकिंग उत्पादों का विपणन है। ग्राहक समूहों की विविधता के कारण उत्पादों की विविधता होती है। ग्रामीण, कस्बाई एवं शहरी ग्राहकों की आवश्यकताएं अलग-अलग होती है। उनकी आर्थिक स्थिति में भिन्नता होती है, आस्तियां अलग-अलग होती हैं। अतः स्वाभाविक है कि बैंक जो योजनाएं ग्रामीण क्षेत्र में चला सकते हैं, वही योजनाएं ज्यों की त्यों शहर में नहीं चला सकते। इसका अभिप्राय यह है कि बैंकों की सभी सेवाओं का विपणन हर जगह एक तरीके से नहीं हो सकता।

बैंकों के उत्पादों का विपणन अर्थात् योजना को लक्ष्य समूह के ग्राहक तक पहुँचाने में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। बैंकिंग सेवाओं में सेवा का तत्त्व ही प्रमुख होता है एवं सेवा का आधार भाषा होती है। संप्रेषण के लिए आवश्यकतानुसार भाषा अपनानी पड़ती है एवं इसमें मातृभाषा ही सबसे अधिक सहायक होती है। अंग्रेज़ी हमारे दिलों की भाषा नहीं हैं इसलिए अंग्रेज़ी के शब्द हमारे दिलों तक नहीं पहुँच पाते और इसी कारण संप्रेषण का कार्य अधूरा रह जाता है।

किसी भी देश का विकास उस देश की अर्थव्यवस्था से जुड़ा होता है। यदि हम भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था की बात करें तो यह तथ्य खुलकर सामने आता है कि औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के बावजूद भी भारत की अर्थ-व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों से जुड़ा है। सौभाग्यवश बदलाव की इस बयार में संपूर्ण बैंकिंग का ध्यान एक बार फिर से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की ओर मुड़ा है। जहाँ भारत की आत्मा बसती है।

'वित्तीय समावेशन' की बात तो हम वर्षों से करते आ रहे हैं और इसके लिए पिछले कुछ वर्षों में प्रयास भी किए गए हैं। वित्तीय समावेशन से तात्पर्य है, उन लोगों तक वहन योग्य लागतों पर बैंकिंग सेवाएं पहुँचाना, जो अभी तक इनसे वंचित है। ग्रामीण जन-जीवन में वित्तीय-समावेशन बैंकों और औपचारिक वित्तीय-क्षेत्र के अन्य संगठनों के लिए एक अवसर

और साथ-साथ चुनौती भी है। आज जबकि हमारी बैंकिंग व्यवस्था सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार-क्रांति के युग से गुज़र रही है यही सही वक़्त है जब हम अपना शत-प्रतिशत वित्तीय समावेशन का सपना साकार कर सकते हैं और शायद इसलिए ही वित्त-मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकों को दिशा-निर्देश दिये हैं कि 100 प्रतिशत वित्तीय-समावेशन का कार्य 3 सालों में पूरा कर लिया जाए। इस कार्य के लिए भारत के बैंक अपनी शाखाएं खोलकर या फिर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की मदद से व्यवसायिक प्रतिनिधि (बिजनेस कॉरसपौंडेंट्स) लगा कर या फिर मोबाइल बैंकिंग की मदद से भी कर सकते हैं। ग्रामवासियों के घरों तक एवं दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक बैंकिंग सेवाएं पहुँचाने का यह कार्य केवल उनकी ही भाषा के जरिये असरदार ढंग से किया जा सकता है और क्योंकि हिंदी ही हमारे देश की एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि भारतवर्ष के 40-50 प्रतिशत गाँवों में बोली एवं समझी जाती है। बैंकों में हिंदी की सार्थकता का एक ज्वलंत उदाहरण है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट बैंकिंग के उपयोग को ख़ूब बढ़ाया जा सकता है अगर हम इन चैनलों को अपनी मातृभाषा हिंदी में दे सकें।

अगर हम अपने भारतीय होने पर गर्व महसूस करते हैं तो अपनी राजभाषा को बढ़ावा देना हमारा कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि देश के लोगों को आपस में जोड़ने का एक माध्यम भी है। हिंदी के शब्द कठिन होते हैं यह कहने वाले आज के युग में भी कम नहीं है। यहाँ यह बताना ज़रूरी है कि शब्द अपने आप में कठिन या सरल नहीं होते केवल परिचित या अपरिचित होते हैं। बस लिखने वाले को इस बात का अहसास होना चाहिए कि वह किसके लिए लिख रहा है। हमारा चिंतन-मनन और लेखन-सृजन हिंदी की प्रकृति के अनुकूल एवं मौलिक है। अनुवाद का सहारा लेना भी पड़े तो हमें स्कूल-कॉलेजों में बोली जाने वाली हिंदी या फिर समाचारों को पढ़े जाने वाली हिंदी की ओर देखना चाहिए जिसमें वाक्य हिंदी के हों तथा शब्द चाहे कहीं से भी लिये गये हो।

यहाँ यह बताना उचित होगा कि हिंदी अपनी ताकत से बैंकिंग की धुरी बनी हुई है। बैंकों में जनभाषा अर्थात् राजभाषा को काम-काज की भाषा के रूप में स्वीकार्य किया गया है। जिसके कारण जन-सामान्य सीधे तौर पर बैंकों से जुड़ा हुआ है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंक अच्छा कारोबार कर रहे हैं। जिसका मुख्य कारण जन-भाषाओं का प्रयोग ही है। भारतीय बैंकों के बढ़ते कारोबार ने इसकी सार्थकता को सिद्ध कर दिखाया है। विश्व स्तर पर भारतीय मुद्रा का प्रतीक चिन्ह ₹ जो कि देवनागरी हिंदी में है, आर्थिक जगत में हिंदी के प्रयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

- प्र.का. प्राथमिकता विभाग, नई दिल्ली

अभिलाषा

मनप्रीत कौर

मेरा मन करता है
उड़ जाऊँ-दूर कहीं पंख लगा के
ऊँची उड़ान भरूं-
दूर कहीं गगन में.....

नीला गगन
नया जीवन
नया संसार हो जहाँ....
मैं अपने मन की इच्छाओं में

आशाओं और उम्मीदों के मोती चुनती
आधे-अधूरे सपने बुनती
अपने अरमानों के सपने लिए
खो जाना चाहती हूँ....

गगन की असीमता में....
पर, क्या करूँ
मेरे पंख हैं छोटे
और विशाल है गगन

मैं जानती हूँ
मैं थाह नहीं ले पाऊँगी
विशाल गगन की असीमता की
क्योंकि मेरे पंख हैं छोटे.....
और विशाल है गगन।

सुपुत्री डॉ. चरनजीत सिंह
प्र.का. राजभाषा विभाग
नई दिल्ली

.....कायर नहीं था मैं

देवेन्द्र पाल

''हैलो.....''

''हैलो.....''

'' आज मैं नहीं आ पाऊँगी, 'शेखर'।'' मोबाइल पर आवाज़ सुनते ही शेखर बौखला गया था और चिल्लाया था,

''क्यों नहीं आ पाओगी?''

''आज रक्षा-बंधन है, पगले इतना भी नहीं जानते। तुम कहाँ जान पाओगे?तुम्हारी कोई बहन होती तब न.....हाँ नहीं तो।'' शैलजा ने फ़ोन पर ही डाँटते हुये शेखर से कहा था तो शेखर को लगा जैसे बादल फट गया हो, प्रलय आ गयी हो। और अचानक शांत होते हुए बोला था, ''कोई बात नहीं।''

दरअसल शेखर और शैलजा एक-दूसरे को प्यार करते थे। ऐसा शायद ही कोई दिन रहा हो जब वे आपस में न मिले हों। शेखर इस शहर का माना हुआ गुंडा था जो गाँव से भागकर शहर में आ गया था।

''क्या हुआ शेखर तुम नाराज़ हो गये।'' शैलजा का प्यार छलछला उठा था।

''नहीं शैलजा, सॉरी, मुझे माफ़ कर देना।'' शेखर फ़ोन पर ही बिलबिलाने लगा था और मोबाइल का स्विच ऑफ़ कर दिया था। न जाने क्यों आँखें भर आयी थी उसकी, और आँखों से टपकते हर आँसू में उसे आराधना का मासूम सा चेहरा दिखाई देने लगा था। हाँ, हाँ यही नाम तो था उसकी बहन का। बहुत प्यार करता था अपनी आराधना को वह। अम्मा जी और बाबू जी की मृत्यु के पश्चात् बहुत लाड़-प्यार से पाला था उसने आराधना को। कई बार तो सोते-सोते ही आराधना-आराधना करने लगता था वह-'उस दिन भी तो रक्षा-बंधन ही था.....' सोचने लगा था शेखर। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो कोई इतिहास से पन्ने चुरा रहा हो,' ..... उसकी आराधना थाली में मोतियों से सजी राखी लिये खड़ी थी। थाली में रोली और चंदन रखे हुए थे और वह पागल सा निहारे चला जा रहा था अपनी आराधना को तभी तो वह बोली थी, ''क्या भइया! ऐसे ही देखते रहोगे या राखी भी बंधवाओगे?'' ''देख लेने दे मुझे। तुझे देखकर ऐसा लग रहा है मानो परी उतर आयी हो आसमान से।'' प्यार और स्नेह के साथ-साथ ममता का समुद्र हिलोरे मार रहा था, उसके हृदय में कि तभी आराधना बोल पड़ी थी,

''भइया, आप नज़र लगायेंगे मुझे।''

''अरे पगली क्या भाईयों की भी नज़र लगती है बहनों को। अच्छा चलो अब राखी बाँधो।'' शेखर की बातों में अधिकार था तो अपनापन भी था।

आराधना ने जैसे ही अपने भाई के राखी बाँधनी चाही कि न जाने कहाँ से चौधरी साहब का बेटा किसी बाज की तरह झपट्टा मारने लगा था उसके साथ पाँच-सात गुंडे भी थे। चौधरी साहब का बेटा आराधना को खींच कर चलने लगा था थाली में रखी रोली और चंदन ज़मीन पर बिखर गये थे। राखी हवा में लहराने लगी थी। थाली के ज़मीन पर गिरने से, कुछ टूटने से शांत वातावरण में कोलाहल सा मचने लगा था। ''भइया मुझे बचा लो'' के चीत्कार से पृथ्वी का सीना छलनी हुआ जा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो आसमान फट पड़ेगा। शेखर को चौधरी साहब के लड़के के साथ आये गुंडों ने मार-मार कर ज़मीन पर गिरा दिया था और चौधरी साहब का बेटा अपने साथियों के साथ आराधना को अपनी जीप में डालकर किसी 'जीते हुए योद्धा' के समान शान से चला गया था।'' सोचते-सोचते अचानक चौंक गया था शेखर।

शेखर ने मोबाइल उठाया.....राधू, विक्रम, अब्दुल्ला, जॉन, दिनेश और कासिम को नंबर मिला दिये थे। ठीक आधे घंटे में सभी शेखर के पास इकट्ठे हो गये थे।

'क्या करना है भाई'। सभी एक साथ बोले थे।

''किसी को टपकाने का है।'' शेखर चिल्लाया तो सभी सहम गये थे और शेखर के चेहरे को देखते रह गये थे। उन्होंने आज तक इतना गुस्सा और परेशान नहीं देखा था शेखर को। देखते ही देखते सभी अपनी-अपनी जीपों में सवार हो गये थे। उनके हाथों में रिवॉल्वरें और खुली तलवारें तथा चाकू थे। ऐसा लग रहा था मानो रण-क्षेत्र के लिये योद्धा निकल पड़े हों। जीप हवा से बातें कर रही थी। कुछ देर पश्चात् वे सभी चौधरी साहब के घर पहुँच गये थे।

चौधरी साहब का घर फूलों से सजाया गया था। सारा वातावरण फूलों की सुगंध से महक रहा था। अंदर आँगन में चौधरी साहब का बेटा अपनी बहन के साथ राखी बंधवाने के लिये तैयार था। चौधरी साहब की बेटी चांदी की थाली में रोली, चंदन और राखी सजाये खड़ी अपने भाई को निहार रही थी कि शेखर दहाड़ा था, ''आज के बाद अब कोई राखी नहीं

बांधी जाएगी।'' शेखर और उसके साथियों को देखकर आंगन में खड़े सब लोग भय से कांपने लगे थे। देखते ही देखते खुशियों से भरे आंगन में मृत्यु का सा सन्नाटा छा गया था। शेखर को देखकर चौधरी साहब के बेटे को लगा कि उसकी पेंट गीली हो गई हो। पास में ही खड़े चौधरी साहब ने मौक़ा पाते ही शेखर पर निशाना दागने की कोशिश की ही थी कि अब्दुल्ला ने चौधरी साहब के हाथ में गोली दाग दी थी। बंदूक जमीन पर गिर गयी थी कि तभी शेखर बोला था, ''याद करो चौधरी साहब। आज का ही दिन था.....हाँ, हाँ, रक्षा-बंधन ही तो था, तुम्हारा यही बेटा मेरी बहन को मेरे घर से खींच कर ले गया था, आज तक मेरी बहन का कुछ पता नहीं चला। क्या अपराध किया था मैंने या मेरी बहन ने। मैं मानता हूँ तुम बड़े लोग हो तुम्हारे लिये दूसरों के रिश्तों का कोई महत्व नहीं है। तुम्हारे लिये सिर्फ़ तुम्हारी ही माएं, बेटियां, बहनें सब कुछ है, दूसरों की.... .....।'' अभी शेखर इतना बोल भी नहीं पाया था कि कासिम चिल्लाया, ''शेखर भाई बातों में टाईम ख़राब नहीं करने का। इस साले को इधर ईच टपकाने का है..... क्या बोला और इस लौंडिया को उठाकर ले चलने का है .....''

आंगन में खड़ी चौधरी साहब की बेटी 'बेर के पत्ते' की तरह कांप रही थी कि हिम्मत करके बोली, ''हाँ, हाँ ले चलो मुझे। मेरे भाई ने शेखर भइया की बहन को खींच लिया था और तुम सब मुझे खींच कर ले जाओ। बस यही सिलसिला चलता रहे। फिर शेखर की तरफ मुड़कर बोली थी, ''शेखर भइया! मेरे भाई ने जो अपराध किया वह अक्षम्य है। ये मेरा भाई नीच और गिरा हुआ इंसान है। मुझे तो इसे भाई कहने में भी शर्म आती है। लेकिन तुम जानते हो बहन को खोने की पीड़ा क्या होती है?सच बताऊं, बहनें ही क्यों, एक नारी के अपमान की पीड़ा को तुमसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता। तुमने बहन खोई है, तुमने दर्द सहा है, तुम राखी का अर्थ समझते हो।'' इतना कहने के बाद वह क़ासिम की ओर मुड़ी और बोली थी, ले चलो मुझे।

चौधरी साहब, चौधराइन और उनका बेटा ज़मीन में शर्म से गढ़े जा रहे थे कि शेखर दहाड़ा था, ''नहीं.....नहीं.....नहीं..... कोई नहीं छुएगा, मेरी आराधना को।'' और भागकर चौधरी साहब की बेटी को अपने सीने से लगा लिया था। चारों तरफ करूणा, भावना, प्रेम और वात्सल्य का सैलाब उमड़ पड़ा था सभी लोग स्तब्ध थे।

फिर न जाने शेखर को क्या हुआ कि उसने एक पल में ही चौधरी साहब की बेटी को अपने सीने से हटा दिया और बाहर खड़ी जीप की तरफ बढ़ने लगा था कि चौधरी साहब की बेटी बोली थी, ''भइया, मुझे छोड़कर मत जाओ.....।'' शेखर ने मानो कुछ सुना ही न हो और चौधरी साहब के घर के बाहर खड़ी जीप में आकर बैठ गया था। कुछ ही पलों में उसके पीछे-पीछे उसके साथी भी अपनी-अपनी जीप में आकर बैठ गये थे कि तभी शेखर के साथ बैठा जॉन बोला था, ''भाई तो ऐड़ा है.....भाय तो हिजड़ा है.....।'' लेकिन शेखर शांत बैठा था और तभी जॉन ने शेखर का कंधा हिलाते हुए पूछा था, ''शेखर भाय तूं कायर हो गया था क्या?''

जॉन, कायर नहीं था मैं। शायद तू भाई-बहन के प्यार का अर्थ नहीं जानता। शेखर इतनी तेज़ चीखा था कि गाड़ी चला रहे अब्दुल्ला का हाथ हिल गया था और गाड़ी सड़क से नीचे उतर कर गड्ढे में गिरते-गिरते बची थी.....

- सहायक निदेशक, वित्तीय सेवाएं विभाग
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

जीवन रचना की व्याख्या

संकलनकर्ता : चरनदीप सिंह

सभी जानते हैं कि पृथ्वी पर आज हमें जो दिखाई पड़ता है उसे भगवान द्वारा ही रचा गया है। इसी क्रम में एक दिन भगवान ने कुत्ते को बनाया और उसे कहा कि मैं तुम्हें 20 वर्ष की ज़िंदगी देता हूं। परंतु कुत्ते ने कहा कि मुझे इतना लंबा जीवन-काल नहीं चाहिए इसे कम कर के 10 वर्ष कर दीजिए। भगवान ने उसकी बात मान ली। इसके बाद भगवान ने बंदर बनाया और उसे भी 20 वर्ष का जीवन दिया। बंदर को भी यह जीवन-काल कुछ लंबा लगा। उसने भी भगवान से इसे 10 वर्ष करने को कहा। भगवान ने उसकी प्रार्थना भी स्वीकार कर ली। फिर भगवान ने गधे की रचना की और उसे साठ वर्ष का जीवन काल दिया। गधे ने भी इतनी लंबी आयु लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मेरे लिए 20 वर्ष बहुत हैं।

इसके बाद भगवान ने मनुष्य की रचना की और उसे भी 20 वर्ष का जीवन काल दिया। इस पर मनुष्य ने आश्चर्य प्रकट किया और प्रार्थना की कि आप गधे, कुत्ते तथा बंदर द्वारा छोड़े गए 60 वर्षों को मेरे जीवन-काल में मिलाकर इसे 80 वर्ष कर दें। भगवान ने इस पर सहमति प्रकट कर दी। इसी के चलते आज मनुष्य अपने हिस्से के जीवन के पहले 20 वर्ष तक ख़ूब आनंद लेता है। इसके बाद गधे से प्राप्त उधार के चालीस वर्ष तक वह कड़ी धूप में अपने परिवार के लिए काम करता हैं। फिर बंदर से प्राप्त दस वर्ष वह अपने पोते-पोतियों का मनोरंजन करने के लिए व्यतीत करता है और कुत्ते से प्राप्त अंतिम दस वर्ष वह घर पर चौकीदारी करने में व्यतीत करता है।

- सुपुत्र स. हरमिन्द्र सिंह
आ.का. अमृतसर

ढाई आखर प्रेम के

डॉ. चरनजीत सिंह

भारतीय मनीषियों ने जीवन में प्रेम को विशद् रूप से परिभाषित किया है। वस्तुतः प्रेम कोई क्रिया नहीं, बल्कि एक भावना है जो वातावरण और परिस्थिति के अनुरूप बदलती रहती है। प्रेम अपने आप में त्याग, ममता, स्नेह, बलिदान और एकनिष्ठा के भावों से अभिभूत होता है। प्रेम गतिशील शाश्वत चेतन तत्व है, क्योंकि प्रेम से बड़ी कोई शक्ति दुनिया में नहीं है। प्रेम एक ऐसा अविभाज्य तत्व है जिसमें सूक्ष्मता और व्यापकता दोनों ही विराजमान हैं। प्रेम एक अत्यंत अर्थगर्भित शब्द है जो स्थूल भी है, सूक्ष्म भी, इन्द्रियजन्य भी है और उदात्त भी। निःसंदेह जीवन को उसको समय और उदात्त रूप में जानने के लिए प्रेम से अधिक उपयुक्त माध्यम नहीं मिल सकता।

प्रेम एक मानसिक भावना है जो पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक-मूल्यों के एकीकरण का सूत्र है। इस में बंधकर वैयक्तिक और सामाजिक संबंध दृढ़ होते हैं। प्रेम की व्यापकता में आत्म-विस्तार की भावना प्रबल रहती है। प्रेम वह धुरी है जिसके आधार पर प्रकृति के सभी जीवधारी प्राणी संचालित होते हैं। प्रेम के विराट स्वरूप में प्रकृति, मानव और परमात्मा सभी समाहित हैं। प्रेम मानो चेतना का अणु है। हमारे धर्म, सभ्यता तथा दर्शन में प्रेम को उच्च स्थान दिया गया है। निःसंदेह प्रेम एक ऐसा शाश्वत सत्य है जो मानव जीवन का अभिन्न अंग है।

प्रेम के विविध रूप हैं। इनमें तमाम मानवीय संबंध आते हैं जो जीवन को गतिशील बनाने में सहायक होते हैं। यद्यपि आदिम युग से आज तक नर-नारी पारस्परिक प्रेम करते रहे हैं, परन्तु सभ्य युग में नर-नारी का पारस्परिक प्रेम सैंकड़ों-हज़ारों शताब्दियों से गुज़र कर परिष्कृत बोध तक पहुँचा है। समय के बदलाव के साथ 'प्रेम' के पारम्परिक मूल्य विश्रृंखलित हुए हैं, साथ ही साथ स्थापित मूल्यों की परिभाषा भी बदली है। इस प्रकार मानव जीवन-शैली तथा जीवन-दर्शन दोनों में जहाँ पूर्व स्थापित मूल्यों में निरंतर ह्रास हुआ है, वहीं नवीन व आधुनिक मूल्य भी ज्ञात-अज्ञात रूप से स्वतः स्थापित होते रहे हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, समाजार्थिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों ने मानव जीवन ढर्रे को पुनर्परिभाषित किया है, परन्तु आधुनिक जीवन की समस्त विसंगतियों, विघटनों व तनावों ने मानव-जीवन की नकारात्मक जीवन-दृष्टि को ही विकसित किया है।

मानवीय संबंधों के नए समीकरणों में तीव्रगामी परिवर्तन उपस्थित हुए हैं, क्योंकि आधुनिक जीवन की स्थितियों में तेज़ी से बदलाव आया है। ये परिवर्तन केवल बाह्य सामाजिक स्थितियों तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि जीवन के विभिन्न आयामों तथा औद्योगिकी, प्रौद्योगिकी, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास ने जीवन के सभी प्रकार के संबंधों में भारी बदलाव ला दिया है। मानवीय संबंधों विशेषकर प्रेम संबंधों पर इन सब का सर्वाधिक प्रभाव देखा जा सकता है।

प्रेम-जीवन का शाश्वत विषय रहा है। प्रेम एक ऐसा प्रेरक मनोभाव है, जिसके द्वारा मानव जीवन के समस्त क्रिया-कलाप सुनियोजित एवं नियंत्रित होते हैं। जीवन में प्रेम का एक विशेष महत्व है। प्रेम ही मनुष्य को मनुष्य कहलाने योग्य बनाता है। जो जीवन में जितना अधिक प्रेम करता है वह उतना ही अधिक मानवीय है। प्रेम की अनंत धारा के कारण ही जीवन बहता है।

प्रेम संबंधों में एकनिष्ठता का अभाव तथा एक दूसरे की भावनाओं की अवमानना प्रेम संबंधों में विषमता उत्पन्न कर देती है। पूर्णतः समर्पित प्रेम ही मानव को प्रेम के एक ऐसे आदर्श तक पहुँचा सकता है, जहाँ इच्छाएं, ललक, कामनाएं व आकांक्षाएं समाप्त हो जाती हैं। आदर्शात्मक प्रेम धीरे-धीरे प्रेम संबंधों को सहज विकास की ओर अग्रसर करता रहता है। ऐसा प्रेम शारीरिकता से दूर रहता है, निस्वार्थ पूर्ण समर्पित प्रेम ही वास्तव में सच्चा प्रेम है।

प्रेम का तात्विक विश्लेषण करते हुए सौन्दर्य-शास्त्रियों ने भी प्रेम का अर्थ ही सौन्दर्य का दर्शन करना माना है। प्रेम है तो सौन्दर्य है, यद्धपि प्रेम और सौन्दर्य दो भिन्न शब्द हैं परन्तु जहाँ प्रेम है वहाँ सौन्दर्य है तथा जहाँ सौन्दर्य है वहाँ प्रेम विद्यमान है। वास्तव में मानवीय चेतना की अभिव्यक्ति में ही सौन्दर्य निहित है। प्रेम एवं सौन्दर्य अन्योन्याश्रित हैं। सौन्दर्य हमारी व्यापक आत्मा को मुद्रित करता है तथा सौन्दर्य अंतकरणगम्य है।

प्र.का. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

सतर्कता, भ्रष्टाचार और हम

दिनेश कुमार गुप्ता

सतर्कता या विजिलेन्स न तो कोई हौवा है और न ही कोई जटिल अथवा गुप्त बात। सतर्कता का अर्थ है संभावित ख़तरों/मुश्किलों से बचाव हेतु सजग रहना, सावधान रहना। मिसाल के तौर पर जब हम कार चलाते हैं तो यातायात नियमों, निर्देश चिन्हों, लाल /पीली/हरी बत्तियों इत्यादि का पूरा ध्यान रखना एवं अनुपालन करना ताकि दुर्घटना न हो। भारतीय रेल की केबिनों पर भी लिखा रहता है 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'। हमें यह समझना होगा कि सतर्कता का उद्देश्य है प्रबंधन कार्य कुशलता एवं प्रभावशीलता में बढ़ोत्तरी। अंग्रेज़ी में कहावत है - The Cautious seldom err.

एक बात जो मैं अक्सर कहता हूँ कि हमें दो चीज़ों से डरना चाहिए - बुरा काम और बुरा वक़्त। आप मानेंगे कि बुरा वक़्त तो अच्छे से अच्छे इंसान पर भी कभी आ सकता है। शायद इस प्रकार ईश्वर आपकी परीक्षा ले रहा होता है। परंतु एक बात तय है कि बुरा काम करने से बुरा वक़्त आने की संभावना काफी प्रबल हो जाती है, भले ही वर्तमान युग कलयुग क्यों न हो। एक फ़िल्मी गाना भी है - ''बुरे काम का बुरा नतीजा, क्यों भई चाचा अरे हाँ भतीजा।'' और बुरा काम वह है जो सभ्य समाज को, देश के कानून को एवं स्वयं हमारी अंतरात्मा को स्वीकार्य न हो जैसे अत्याचार, दुराचार या भ्रष्टाचार। बाईबल की शैली में कहें तो संदेश होगा : Thou shalt not covet Bank's money or customer's money-both cash and in kind.

''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' में हमारे बैंक में नारा था "Corruption anywhere is a threat to honesty everywhere" हर ईमानदार इंसान का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह भ्रष्ट आचरण को सतत् ललकारे और उसके विरुद्ध आवाज़ उठाये। स्वयं भ्रष्ट न होना मात्र ही काफ़ी नहीं है।

तीसरे गुरू साहेब श्री गुरू अमरदास जी ने सिख पंथ की जो तीन मूलभूत मान्यताएं बताई हैं उनमें प्रथम है - किरत करना (Earn by honest means) जितनी ईमानदारी की चाह हो, हम अपने पैर उतने ही पसारें।

हमारे भूतपूर्व (किंचित अभूतपूर्व) सी.एम.डी. माननीय श्री आर. पी. सिंह, आई.ए.एस. जिनको साहित्य के क्षेत्र में भी महारथ हासिल है, ने लिखा है:

'मेहनत से कमा के तू 'सदा' अपनी गुज़र कर
जो मुफ़्त मिले उसमें तो बरकत नहीं होती'

हम सब अंग्रेज़ी की कहावत ill got, ill spent को भली-भांति जानते हैं। वह आगे लिखते हैं :

'दौलत जहाँ की मुझको तू, मेरे ख़ुदा न दे
पूरी हो बस ज़रूरतें, उसके सिवा न दे'

इस संदर्भ में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्पष्ट कहा है कि 'विश्व में मनुष्य की आवश्यकता हेतु पर्याप्तता है, परंतु उसके लालच के लिए नहीं।

संत कबीर के अनुसार ईश्वर से हमारी विनती हो कि :

'साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाय।।'

संतोष में परम सुख है। तभी तो कबीर कह गये कि **'जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।'**

बापू भी अपने प्रिय भजन में ईश्वर से कहते हैं **'सबको सन्मति दे भगवान'।**

अंत में वाहेगुरू से 'अंकुश' फ़िल्म के गीत के बोलों वाली हमारी अरदास हो कि

'इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमज़ोर हो न
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूल कर भी कोई भूल हो न।।'

- मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं महाप्रबंधक (सतर्कता)
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

''र'' से राजनीति

पवन कुमार जैन

आज बड़े दिनों के बाद पुत्तीभाई अपने कंधे पर सब्ज़ी का झोला रखे हुए ईद के चाँद की तरह दिखाई दिए .... मैंने लपककर उन्हें गले से लगा लिया ....वह अपने मुँह पर डकैतों की तरह अंगोछा बाँधे हुए थे। मैंने उनकी इस वेशभूषा पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया और मारे मोहब्बत के आदतन पीठ पर एक धौल जमा दी .... पुत्तीभाई की पीठ वैसे ही अर्जुन के गांडीव की तरह अर्द्ध-चन्द्राकार थी......... करारी धौल से वह बरसात में भीगे बाँस की तरह और मुड़ गई .... उनके मुँह से कराहट निकल गई .... अंगोछा बँधा होने के कारण वह बोल नहीं पा रहे थे .... धौल के धमाके के कारण वह बौख़ला गए और मेरे इस ग़ैर शरीफाना इज़हारे मोहब्बत को कुबूल करने की बजाए मेरी सात पुश्तों को तौलने लग गए .... बीच-बीच में वह कराह भी रहे थे .... मैंने अपनी पुश्तों के इस बेबाकी के साथ सजरा नापने पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया बल्कि पके आम की तरह सूजे उनके मुँह की तरफ देखकर मैंने वैसे ही मज़ाकन पूछ लिया .... क्या बात है यार क्या अब भी भाभी जी झाड़-पोंछ पर ध्यान देती हैं। पुत्ती ने हमारी पुश्तों को नापने के लिए अभी मुँह खोला ही था कि फिर से रेल के इंजन की तरह मुँह से सीटी निकल गई। मैंने पूछा कि मियाँ आख़िर माजरा क्या है .... किसने ऐसी -तैसी कर दी हमारे दोस्त के चश्मे-बद्दूर मुँह की। पुत्ती ने अब तक कुछ एनर्जी इकट्ठी कर ली थी .... वह मोढ़ा खींचकर बैठ गए और जाने कैसा टेढ़ा-मेढ़ा मुँह बनाकर बोलने का प्रयास करने लगे। अमाऽऽ कुछ नहीं, बड़े दिनों से तुम्हारी भाभी के भाइयों ने नाक में दम कर रखा था कि जीजाजी गाँव आकर आम खा जाईये .... मैंने कहा भी कि कम्बख़्तों जब पेट में आँत और मुँह में ओरीजनल बत्तीस दाँत थे तो आम क्या उसकी गुठली के लिए भी नहीं पूछा और आज जब आम के नाम से ही हाजत महसूस होने लगती है तो सीकर आम की तरह मोहब्बत टपका रहे हो .... लेकिन जनाब साले तो साले ही ठहरे, जाना पड़ा .. .. मुझे याद पड़ रहा है कि शादी के पैंतीस साल बाद शायद पहली बार ससुराल गया था .... आजकल के छोकरे तो कम्बख़्त सारे ससुराल में ही पड़े रहते हैं .... न जाने कौन सी सुँघनी सुंघ देते हैं यह ससुरालिये की कि अपने माँ-बाप आउटडेटेड से लगने लगते हैं। सास-ससुर को मम्मी-पापा कहते ज़ुबान नहीं थकती, जबकि अपने माँ-बाप को देखकर त्यौरियाँ ही चढ़ी रहती हैं।

सारी दुनिया बदल गई .... मुझे तो लगता है कि पिछले दिनों चन्द्रयान ने जाकर चंद्रमा के कुछ दाग़ वगैरह भी साफ़ कर दिए हैं .... मगर मेरी ससुराल का गाँव नहीं बदला .... वही बदबू और कीचड़दार गलियारे .. .. नंगे-बूचे दौड़ लगाते छोकरे .... गोबर से सनी पूँछ से हवा करने के बहाने अतिथि का स्वागत करते छुट्टा जानवर .... आदमियों से पहले खाने का टेस्ट करती मक्खियाँ .... रात को डकैतों की तरह घात लगाकर गुरिल्ला आक्रमण करते मच्छर .... घूँघट में भूख और बीमारी से सूखे चेहरे को छिपाए जाहिल औरतें .... जिन्होंने कभी हँसी और खुशी को घर की कुंडी खटखटाते नहीं देखा .... पैंतीस साल में केवल चेहरे बदले थे किंतु करेक्टर नहीं बदले थे .... बिल्कुल वैसे का वैसे ही।

शादी के पहले मैं फ़िल्में देखने का शौक़ीन था .... फ़िल्मों में जब कभी

अल्हड़ गाँव की गोरी को देखता और वहाँ की खुशहाली को देखता तो दिल बल्लियाँ उछलने लगता था ..... मन यही करता कि शादी करनी है तो किसी गाँव की लड़की से ही करनी है ..... इसीलिए जब मेरे पिताजी ने यह बताया कि गाँव से शादी के लिए रिश्ता आया है तो मैं आर्कमिडीज की तरह से उछलने लगा ..... पिताजी ने पूछा भी कि अबे इतना कूद क्यों रहा है ..... मैंने कहा कि कुछ नहीं पिताजी तलुवे में कांटा चुभ गया था ..... मगर तुम्हें क्या बताएँ कि काँटा तलुवे में नहीं दिल में पेवस्त हुआ था। किसी तरह अम्मा के माध्यम से पिताजी को यह बात पहुँचा दी कि रिश्ते में मेरी तरफ से कोई अड़चन नहीं है ..... लेकिन मियाँ जब बारात गाँव में पहुँची तो बारातियों का स्वागत पान पराग से नहीं इन्ही नामुरादों की पिछली पुश्तों से हुआ। नये चमचमाते सूट और जूतों-जुराबों का कीचड़ से वह प्रक्षालन हुआ कि बेचारे जब तक सलामत रहे ससुरालीय कीचड़ की खुशबू की कमी महसूस न होने दी। गाँव की गोरी का हाल तो तुमसे अच्छा कौन जानेगा ..... मोहल्ले-टोले का शायद कोई घर बचा हो जिससे डोंटा-नोचाई न हुई हो ..... अलबत्ता जिस दिन कोई सवा सेर मिला और पाला कमज़ोर पड़ा..... समझो उस दिन हमारी ख़ैर नहीं ..... सारा गुस्सा-सारी लानत-मलामत मेरे सिर।

मैंने उनकी बात को काटकर कहा - मगर मियाँ यह मुँह का ज्योग्राफिया कैसे बिगड़ गया ..... मुँह का नाम लेते ही उनका हाथ बरबस ही अपने चोटैले मुँह पर चला गया ..... वह ऐसे कड़कड़ा कर कराहे मानो रामसे ब्रदर्स की किसी हॉरर फ़िल्म का दरवाज़ा कड़कड़ा कर खुला हो ..... कराहट का बैकग्राउंड म्यूज़िक बंद होते ही वे फ़्लैशबैक में चले गए ..... अमा ज्योग्राफिया बिगाड़ा कम्बख़्त सालों के इलेक्शन..... उनका आम-वाम का तो बहाना था..... वास्तव में साले एंड कंपनी प्रधान का इलेक्शन लड़ने जा रहे हैं और मुझे चुनाव में काम करने और उनके लिए लच्छेदार भाषण लिखने के लिए बुलाया गया था। चुनाव में पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा था ..... कल तक जिन हरवाहों-चरवाहों को बिना विशेषण के पुकारा तक नहीं जाता था आज उनके लिए शरबत और हुक्के तैयार रखे हुए थे ..... शहर के हलवाई रात-दिन मुंशी प्रेमचंद के कफ़नखोरों को नाना प्रकार के व्यंजन से तर किए हुए थे ..... कानफोड़ू लाउडस्पीकर पर गाँव के अधनंगे बच्चे अपनी स्टाईल का ब्रेकडांस करके आंतड़ियाँ हिलाए हुए थे ..... खाना-पीना, कपड़े-लत्ते, गांजा-शराब, गुटखा-तम्बाकू की कोई कमी नहीं ..... जितना मन आए खाओ ..... और आँख बचाकर घर भी ले जाओ ..... बीड़ी की जगह विल्स फ्लेक ..... जवानों और बूढ़ों के साथ-साथ बच्चे भी सुट्टा लगाने की प्रेक्टिस कर रहे थे। मुझे बड़ा अटपटा लगा कि इतना पैसा पानी की तरह महज प्रधानी के इलेक्शन के लिए बहाया जा रहा है ..... . अगर यही पैसा गाँव की सड़क या कुओं पर खर्च कर दिया जाए तो यह भी फ़िल्मी गाँव जैसा लगने लगे ..... यह बात जब मैंने बड़े साले साहब से कही तो वह मेरी मासूमियत पर बड़ी ज़ोर से खिलखिलाए और मुझे ज्ञान देते हुए बोले ..... भैया अगर यह सड़क मैंने बनवा दी या कुएं ठीक करवा दिए या तालाब बनवा दिए तो प्रधानी जीतने के बाद क्या करेंगे ..... यह इतना हो-हल्ला इसी के लिए तो कर रहे हैं कि जीतने के बाद सड़क-कुएँ-तालाब-स्कूल बनवा कर इसका दस गुना वसूल कर सकें। अरे भैया ..... गोरमिंट की हर स्कीम पर बिना हमरे दसख़त के किसी को एक पैसा नहीं मिल सकता ..... बस भैया रामजी से यह मनाओ कि एक बार प्रधान हो जाएँ तो पूरे परिवार का कल्याण हो जाए .. .. सात पुश्तें भी बैठकर खाएँ तो न चुकेगा ..... पिछले सारे दलिद्दर दूर हो जाएँगे ..... मैंने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और पूछ बैठा कि लेकिन भैया इलेक्शन के लिए तुम्हारे पास इतना पैसा कहाँ से आया ..... कोई लाटरी लगी है क्या ..... अरे नहीं भाई ..... उन्होंने अपना मुँह मेरे कान के पास लाकर कहा ..... कौनौ से कहेव ना ..... पाँच बीघा खेत बेच दिया है। अगर प्रधान हो गए तो समझो कि पचासन बीघा खेत के मालिक होय गये ..... वह सपने के हिंडोले पर बैठे हुए थे ..... गाँव का मेहनती किसान राजनीति के पहाड़े को अपनी तरह से याद कर रहा था ..... और अपनों को दो दूनी चार नहीं दो दूनी सौ सिखा रहा था तरक्की का शार्टकट उन्होंने शहर वालों से सीख लिया था ..... मेरा मन वहाँ नहीं लगा ..... झोला-असबाब लेकर वापिस आने के लिए स्टेशन पहुँचा तो सालों ने पैर पकड़ लिए कि अगर मैं ही साथ न दूँगा तो गाँव के लोग क्या साथ देंगे। मैंने अपना पैर छुड़ाने के लिए झटका दिया तो संभल न पाया और जबड़ा कच्ची जमीन में जा धंसा ..... वह तो कहो ज़मीन कच्ची और कीचड़ से भरी थी ..... अगर कहीं पक्की सड़क होती तो बत्तीसी के बाकी बचे दाँत शहीदों की लिस्ट में आ जाते ..... कीचड़ में मुँह धंसने के बावजूद आज मुझे उसमें से बदबू नहीं आ रही थी ..... लेकिन गाँव में घुस आई राजनीति की दुर्गंध ने अब तक मेरा पीछा नहीं छोड़ा है। पुत्तीभाई ने अपने मुँह पर से अंगोछा हटा लिया ..... शायद उनके मुँह की तकलीफ़ कुछ कम हो गई थी।

- आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

नई शाखाएँ/ए.टी.एम.

दिनांक 11 मार्च 2011 शाखा उत्तम नगर, नई दिल्ली।

दिनांक 11 मार्च 2011 ऑफ साईट ए.टी.एम. बेरी वाला बाग, नई दिल्ली।

दिनांक 23 मार्च 2011 शाखा मानेसर, ज़िला गुड़गाँव।

दिनांक 07 मई 2011 शाखा पल्लवपुरम, ज़िला मेरठ।

दिनांक 02 जून 2011 शाखा भैणी महराज, ज़िला बरनाला।

दिनांक 04 जून 2011 शाखा तलवंडी भंगेरियां, ज़िला मोगा।

दिनांक 04 जून 2011 शाखा नसराली, ज़िला लुधियाना।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा माछीवाड़ा, ज़िला लुधियाना।

नई शाखाएँ

दिनांक 24 जून 2011 शाखा सिधौली, लखनऊ।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा पानागढ़, ज़िला वर्धमान।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा भिखीविंड, ज़िला तरनतारन।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा उल्सूर, बैंगलोर।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा भिवाड़ी, ज़िला अलवर।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा बलबेरा, ज़िला पटियाला।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा भोलथ, ज़िला कपूरथला।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा आदमपुर, ज़िला जालंधर।

नई शाखाएँ

दिनांक 24 जून 2011 शाखा होशंगाबाद रोड़, भोपाल।

दिनांक 24 जून 2011 शाखा रायकोट, ज़िला लुधियाना।

दिनांक 12 जुलाई 2011 शाखा बद्दी, ज़िला सोलन।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा मुण्डका, दिल्ली।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा मंगोलपुरी, दिल्ली।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा दीप सिंह वाला, ज़िला फ़रीदकोट।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा पंज ग्रेन कलां, ज़िला फ़रीदकोट।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा पिहोवा, ज़िला कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

नई शाखाएँ

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा ढ़िलवां, ज़िला कपूरथला।

दिनांक 25 जुलाई 2011 शाखा सनेटा, ज़िला मोहाली।

दिनांक 19 अगस्त 2011 शाखा अशोक नगर, चेन्नै।

दिनांक 19 अगस्त 2011 शाखा बजबज, कोलकाता।

दिनांक 19 अगस्त 2011 शाखा लौहारका, ज़िला अमृतसर।

दिनांक 19 अगस्त 2011 शाखा लाड बंजारा कलां, ज़िला संगरूर।

दिनांक 19 अगस्त 2011 शाखा जींद।

नए ए.टी.एम.

दिनांक 10.05.2011 को आसा राम अग्रवाल एजुकेशन एण्ड रिसर्च सोसायटी, गाँव गोला, ज़िला अम्बाला।

दिनांक 24.06.2011 को रीड रोड, अहमदाबाद।

दिनांक 30.06.2011 को शाखा अमीरपेट, हैदराबाद।

दिनांक 25.07.2011 को शाखा राज़पुर रोड, देहरादून।

दिनांक 25.07.2011 को शाखा अड्यार, चेन्नै।

दिनांक 25.07.2011 को शाखा कैलाश कालोनी, नई दिल्ली।

दिनांक 25.07.2011 को शाखा पानागढ़, कोलकाता।

दिनांक 31.07.2011 को शाखा गांधी रोड़, देहरादून।

का शुभारंभ

दिनांक 19.08.2011 को लार्ड कृष्णा पॉलीटेक्नीक कॉलेज, कपूरथला।

दिनांक 19.08.2011 को शाखा चाँद नगर, नई दिल्ली।

दिनांक 19.08.2011 को शाखा पटेल नगर, नई दिल्ली।

दिनांक 19.08.2011 को शाखा मोती नगर, नई दिल्ली।

बैंक द्वारा कर दाताओं की सुविधा हेतु ए.टी.एम. के माध्यम से आयकर जमा करने की सेवा का शुभारंभ करते हुए हमारे विशिष्ट ग्राहक।

दिनांक 19.08.2011 को नारायणा, नई दिल्ली।

इस अवसर पर महानियंत्रक लेखा श्री सी. आर. सुन्दर मूर्थि का पुष्प-गुच्छ से स्वागत करते हुए कार्यकारी निदेशक महोदय।

इस अवसर पर मुख्य नियंत्रक लेखा श्री जवाहर ठाकुर का पुष्प-गुच्छ से स्वागत करते हुए मुख्य महाप्रबंधक महोदय।

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित

हिंदी दिवस समापन समारोह

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित हिंदी दिवस समापन समारोह

आंचलिक कार्यालय स्तर पर आयोजित हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ

बैंक की गृह-पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के मार्च-2011 अंक का विमोचन करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री पी. के. आनन्द।

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित 'कंप्यूटर संबंधी विशिष्ट हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर वित्त-मंत्रालय, भारत सरकार, वित्तीय सेवाएं विभाग के उपनिदेशक (रा.भा.) श्री रामनिवास शुक्ल का स्वागत करते हुए, सहायक महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित 'कंप्यूटर संबंधी विशिष्ट हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम' में प्रशिक्षण देते हुए श्री कुलदीप सिंह खुराना, प्रबंधक (रा.भा.)

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय (प्रथम) निबंध प्रतियोगिता में प्रधान कार्यालय में कार्यरत श्रीमती नीलम मल्होत्रा को भाषा वर्ग 'ख' में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। पी.एस.बी. परिवार की ओर से इन्हें हार्दिक शुभकामनाएं।

चण्डीगढ़ बैंक नराकास के तत्वावधान में स्थानीय प्रधान कार्यालय चण्डीगढ़, द्वारा आयोजित अंतर बैंक हिंदी 'संस्मरण प्रतियोगिता' में सहभागियों को संबोधित करते हुए पीएसबी सेंटर फॉर रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग के प्रधानाचार्य श्री एस. पी. एस. कलसी।

चण्डीगढ़ बैंक नराकास के तत्वावधान में स्थानीय प्रधान कार्यालय चण्डीगढ़, द्वारा आयोजित अंतर बैंक हिंदी 'संस्मरण प्रतियोगिता' में सहभागिता करते विभिन्न बैंकों के स्टाफ़-सदस्य।

वर्ष 2010-11 के दौरान राजभाषा संबंधी श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए चण्डीगढ़ बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से ''राजभाषा शील्ड'' ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक श्री रविन्द्र गोसाई।

नराकास अध्यक्ष के हाथों 'राजभाषा ज्ञान पुरस्कार' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सुरजीत सिंह।

नराकास अध्यक्ष के हाथों 'हिंदी वर्ग पहेली' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दर्शन सिंह।

नराकास अध्यक्ष के हाथों 'हिंदी समाचार प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती मालिनी शर्मा।

आंचलिक कार्यालय लखनऊ, दिनांक 21.04.11

आंचलिक कार्यालय-I दिल्ली, दिनांक 10.05.11

आंचलिक कार्यालय बठिंडा, दिनांक 13.05.11

आंचलिक कार्यालय पटियाला, दिनांक 13.05.11

आंचलिक कार्यालय-I चण्डीगढ़, दिनांक 19.05.11

आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर, दिनांक 23.05.11

आंचलिक कार्यालय हरियाणा, चंडीगढ़ दिनांक 24.05.11

आंचलिक कार्यालय-II चण्डीगढ़, दिनांक 25.05.11

आयोजित हिंदी कार्यशालाएँ

आंचलिक कार्यालय अमृतसर (शहरी), दिनांक 26.05.11

आंचलिक कार्यालय लुधियाना, दिनांक 09.06.11

आंचलिक कार्यालय-III दिल्ली, दिनांक 10.06.11

आंचलिक कार्यालय अमृतसर (ग्रामीण), दिनांक 16.06.11

आंचलिक कार्यालय बरेली, दिनांक 22.06.11

आंचलिक कार्यालय मुंबई, दिनांक 24.06.11

आंचलिक कार्यालय-II दिल्ली, दिनांक 28.06.11

आंचलिक कार्यालय देहरादून, दिनांक 28.06.11

हिंदी/पंजाबी कार्यशालाएँ

आंचलिक कार्यालय-I, चंडीगढ़ दिनांक 27.07.11

आंचलिक कार्यालय-II, चंडीगढ़ दिनांक 11.08.11

आंचलिक कार्यालय, चेन्नै दिनांक 12.08.11

आंचलिक कार्यालय-II, दिल्ली दिनांक 17.08.11

आंचलिक कार्यालय, जालंधर दिनांक 19.08.11

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर (शहरी) दिनांक 24.08.11

आंचलिक कार्यालय, मुम्बई दिनांक 29.08.11

आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर दिनांक 09.09.11

शाखाओं का स्थानांतरण

दिनांक 14.03.2011 को शाखा जबलपुर को नए परिसर में स्थानांतरित किया गया। श्री वी. एन. वर्मा सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस सी.बी.आई./ए.सी.बी. एवं श्री वाई. के. शर्मा आंचलिक प्रबंधक नए परिसर का उद्घाटन करते हुए।

दिनांक 30.05.2011 को शाखा अरबन इस्टेट को वालिया एन्कलेव, पटियाला में स्थानांतरित किया गया। नए परिसर का उद्घाटन करते हुए श्री इन्द्र मोहन सिंह बजाज, अध्यक्ष इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, पटियाला।

दिनांक 13.06.2011 को शाखा नंदा नगर को ए.बी. रोड़ स्थित नए परिसर में स्थानांतरित किया गया। श्री चंद मोली शुक्ला, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, इंदौर विकास प्राधिकरण एवं श्री एच. पी. सिंह, महाप्रबंधक नए परिसर का उद्घाटन करते हुए।

दिनांक 06.07.2011 को शाखा पट्टूर, को नावलूर स्थित नए परिसर में स्थानांतरित किया गया। श्री जी. एस. सचदेवा महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक नए परिसर का उद्घाटन करते हुए।

दिनांक 11.08.2011 को नव स्थानांतरित शाखा मुकलावा का उद्घाटन करते हुए श्री एस. एस. कालरा आंचलिक प्रबंधक, बठिंडा।

हमें इन पर गर्व है।

श्री कुलबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक, शाखा अंबाला रोड, सहारनपुर ने कासा जमा रु. 2 करोड़ बढ़ाने में विशेष योगदान किया।

श्री गुरिन्द्र बीर सिंह रंधावा, लिपिक, शाखा श्री दरबार साहिब, तरन-तारन, ने कासा जमा रु. 3,87,95,188 बढ़ाने में विशेष योगदान किया।

हमें इन पर गर्व है।

आंचलिक कार्यालय, लुधियाना में कार्यरत नामित राजभाषा अधिकारी श्री परमजीत सिंह बेवली को हिंदी कार्यान्वयन संबंधी श्रेष्ठ कार्यों के लिए 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' लुधियाना का कार्यकारिणी सदस्य नामित किया गया है। हम कामना करते हैं कि ये भविष्य में बैंक का नाम और रोशन करें।

श्री दिनेश कुमार गोयल, वरिष्ठ प्रबंधक, सतर्कता कक्ष, कोलकाता द्वारा 'स्टाफ़ सजैशन स्कीम' के तहत ए.एल.पी.एम.एफ. डी.आर. पैकेज को बढ़ाने हेतु दिए गए सुझाव को स्वीकार किया गया। इन्हें बैंक की ओर से रु. 11000/- का इनाम तथा कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र दिया गया।

आंचलिक कार्यालय, फरीदकोट के निरीक्षण विभाग के प्रबंधक श्री कुलदीप शर्मा के सुपुत्र श्री सिद्धार्थ शर्मा ने कम्पनी सेक्रेटरी के प्रोफ़ेशनल प्रोग्राम को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इसके लिए इन्हें बधाई।

शाखा छहरटा, अमृतसर के वरिष्ठ प्रबंधक श्री कुलदीप सिंह की सुपुत्री सुश्री जसजीत कौर को पंजाब टेक्नीकल विश्वविद्यालय के चौथे समैस्टर में प्रथम चार में स्थान प्राप्त करने पर रु. 50,000 का पुरस्कार देते हुए पंजाब के पशु-पालन मंत्री श्री गुलज़ार सिंह रणीके। पी.एस.बी. परिवार उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

श्री कुलविन्दर सिंह, प्रबंधक आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर के सुपुत्र श्री अमृतदीप सिंह ने पंजाब राज्य स्तरीय मानसिक योग्यता प्रतियोगिता में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। पीएसबी परिवार की ओर से शुभकामनाएँ।

श्री कुलविन्दर सिंह, प्रबंधक आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर के सुपुत्र श्री गुरअसीस सिंह ने फूल प्रबंध प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। पीएसबी परिवार की ओर से शुभकामनाएँ।

स्वागतम्

श्री मदन गोपाल श्रीवास्तव ने हमारे बैंक में मुख्य सतर्कता अधिकारी का कार्यभार ग्रहण किया है। पी.एस.बी. परिवार उनका हार्दिक अभिनंदन करता है।

शाखा-राजकोट में कार्यरत डॉ. दीपक एम. शर्मा का नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस' में टाईयों के संग्रह के लिए दर्ज है। इन्हें 'टाईमैन' के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस्' के 'चेस मेगा इवेन्ट' में इनके पूरे परिवार ने 'मास्टर' के रूप में भाग लिया। पीएसबी परिवार को इन पर नाज़ है।

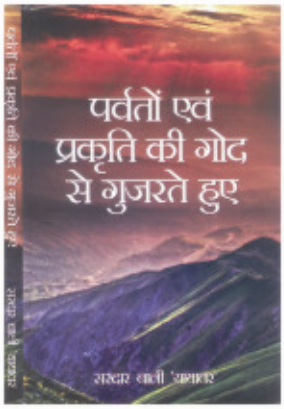

बैंक के पूर्व कार्मिक श्री जी. एस. बाली (सरदार बाली 'यायावर') ने लेह एवं लद्दाख की यात्रा के संबंध में 'पर्वतों एवं प्रकृति की ओर से गुजरते हुए' नामक पुस्तक की रचना की है। इस पुस्तक में इन्होंने जीवन पर्यंत न भूलने वाले अनुभवों, स्मृतियों, तिब्बत प्रदेश के इतिहास एवं वर्तमान तथा लेह एवं लद्दाख की यात्रा में आने वाली कठिनाईयों का सुंदर संकलन किया है।

पी.एस.बी. परिवार उनकी निष्ठा व लगन की प्रशंसा करता है तथा इनके समृद्ध जीवन की कामना करता है।

बैंक के स्थापना-दिवस के अवसर पर आं.का. देहरादून के तत्वावधान में शाखा स्तर पर आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम की झलक।

गतिविधियाँ

दिनांक 21.05.2011 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में शाखा प्रबंधक सम्मेलन में आंचलिक कार्यालय-I दिल्ली, आंचलिक कार्यालय-II दिल्ली तथा आंचलिक कार्यालय-III दिल्ली के अधीन कार्यरत शाखाओं के प्रबंधको को संबोधित करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री पी. के. आनन्द। साथ में मुख्य महाप्रबंधक श्री पी. एस. घावरी, महाप्रबंधक श्री जी. एस. सेठी तथा महाप्रबंधक श्री राकेश खुराना।

दिनांक 15.07.2011 को खन्ना, ज़िला लुधियाना में आढ़ती एसोसिएशन, खन्ना मार्केट के पदाधिकारियों एवं मूल्यवान सदस्यों तथा ग्राहकों को बैंक द्वारा दी जा रही सुविधाओं एंव बैंक सेवाओं के बारे में जानकारी देते हुए स्थानीय प्रधान कार्यालय, चण्डीगढ़ के महाप्रबंधक श्री रविन्द्र गोसाईं एवं आंचलिक कार्यालय लुधियाना के आंचलिक प्रबंधक श्री विरेन्द्र कुमार गुप्ता।

दिनांक 29.06.2011 को खुरजा में आयोजित जन-जागरण कार्यक्रम में बैंक का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री गुरचरन सिंह, महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय-I, नई दिल्ली।

शाखा सिद्धार्थ एन्कलेव, नई दिल्ली में बचत खाता खोलने हेतु चलाये गये विशेष अभियान के दौरान शामिल बैंककर्मी।

श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी गुरूपर्व के अवसर पर श्री गुरचरन सिंह आंचलिक प्रबंधक, दिल्ली-I, छबील पर सेवा करते हुए।

बंडेल शाखा के अंतर्गत नए खाता खोलने संबंधी चलाए गए अभियान के दौरान श्री दीपक मैनी, आंचलिक प्रबंधक कोलकाता का पुष्प-गुच्छ से स्वागत।

आंचलिक कार्यालय पटियाला के अधीन शाखा बूर माजरा द्वारा आयोजित किसान जागरुकता कैम्प में लाभार्थी एंव बैंककर्मी।

दिनांक 11.08.2011 को शाखा मुकलावा में आयोजित किसान-गोष्ठी में आंचलिक प्रबंधक श्री एस. एस. कालरा किसानों को बैंक की ऋण-योजनाओं, किसान क्रेडिट कार्ड, दुग्ध ऋण, मियादी ऋण और नाबार्ड बैंक की विभिन्न योजनाओं से किसानों को अवगत कराते हुए।

वर्ष 2010-11 में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए अनुपालन विभाग के प्रभारी श्री ए. के. सिंह, सहायक महाप्रबंधक तथा लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के प्रभारी श्री अमृत पाल सिंह तेजी, सहायक महाप्रबंधक।

वित्तीय समावेशन कार्यक्रम

वित्तीय समावेशन योजना के अंतर्गत ग्राम-भैंणी मेहराज, ज़िला-बरनाला तथा ग्राम उभे, जिला संगरूर में आयोजित शिविरों में लाभार्थियों को संबोधित करते हुए श्री हरप्रीत सिंह, आंचलिक प्रबंधक, पटियाला।

ए.टी.एम. फ्रॉड से कैसे बचें?

मोहिन्द्र सिंह बतरा

सड़क पर रोज़ हज़ारों एक्सीडेंट होते हैं, फिर भी हम रोज़ अपने काम पर तो जाते ही हैं, भले ही अपनी गाड़ी से जाएं या पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर। इसी प्रकार ए.टी.एम. का इस्तेमाल हम रोज़ करते हैं-हालांकि हर दूसरे दिन हम ए.टी.एम. से जुड़े धोखा-धड़ी के मामले अख़बार में पढ़ते हैं। थोड़ी सी सावधानी हमें नुक़सान से बचा सकती है। निम्न सावधानियां आप को ए.टी.एम. फ्रॉड से बचा सकती हैं :

1. जहाँ तक हो सके हमेशा एक ही ए.टी.एम. मशीन इस्तेमाल करने की आदत डालें। उस मशीन को अच्छी तरह पहचान लें। अगर कभी कुछ अजीब सा लगे या पहले से भिन्न लगे तो चौकन्ने हो जाएँ।
2. किसी बैंक में लगा ए.टी.एम. इस्तेमाल करें न कि किसी बाज़ार में, जहाँ हर ऐरा-ग़ैरा जा सकता है।
3. अगर आप किसी पब्लिक प्लेस पर ए.टी.एम. इस्तेमाल कर रहे हैं तो मशीन को व मशीन के इर्द-गिर्द अच्छी तरह नज़र मार लें। कहीं कोई स्किम्मिंग मशीन या कार्ड ट्रैप या कैमरा आदि तो नहीं लगा हुआ? अगर कुछ शक पड़े तो मशीन का इस्तेमाल न करें।
4. मशीन इस्तेमाल करते हुए किसी अजनबी की मदद मत लें।
5. अगर कोई व्यक्ति ए.टी.एम. मशीन के आस-पास टहलता या बैठा नज़र आये तो उस मशीन का इस्तेमाल न करें।
6. अगर आप का कार्ड मशीन में फंस जाये तो तुरंत बैंक को फ़ोन लगाएं। इसके लिए ज़रूरी है कि आप के पास बैंक का फ़ोन नंबर हमेशा उपलब्ध होना चाहिए।
7. अगर मशीन के ऊपर साधारण से ज़्यादा स्टिकर या वार्निंग साइन आदि लगे हुए हो तो मशीन का उपयोग न करें।
8. अगर आप को (बैंक से) आप के कार्ड के संदर्भ में कोई ई-मेल आये या किसी ई-मेल में आप के कार्ड या खाते के बारे में कोई लिंक भेजा गया हो तो उसे मत छुएं। वह फिशिंग हो सकती है। बल्कि तुरंत इंटरनेट बैंकिंग के जरिये अपना अकाउंट चेक करें या बैंक को फ़ोन कर संपर्क करें।
9. आजकल सभी बैंक अलर्ट की सुविधा देते हैं। अगर आप ने अभी तक यह सुविधा नहीं ली तो यथाशीघ्र ले लें। जब भी आप के खाते में कोई ट्रांजेक्शन होगी आप को एस.एम.एस. आ जायेगा। किसी भी गड़बड़ वाली स्थिति में तुरंत बैंक से संपर्क करें।
10. ए.टी.एम. पर लेन-देन करने के बाद जो कोई भी रसीद या ट्रांसेक्शन रिकॉर्ड स्लिप प्रिंट हो, उसे अपने साथ ले जाएँ। फाड़ कर ए.टी.एम. के आस-पास कहीं मत फेंकें। इस का दुरूपयोग हो सकता है।
11. ए.टी.एम. से पैसे निकालने के बाद पैसे गिन कर अपनी जेब/पर्स में संभाल कर ही वहाँ से बाहर निकलें। पैसे हाथ में पकड़ कर बाहर न निकलें, कोई छीनने के लिए तैयार खड़ा हो सकता है।

घबराइए नहीं, बल्कि सावधान रहे। ए.टी.एम. पर होने वाली कुल ट्रांजेक्शन का केवल 0.0016 प्रतिशत ही फ्रॉड होती हैं। थोड़ी सी सावधानी से आप अपने धन को सुरक्षित रख सकते हैं।

प्र.का. आई.टी. विभाग, नई दिल्ली

कमर दर्द को करें परास्त

कुलदीप सिंह खुराना

आज की व्यस्त और भागम-भाग भरी ज़िंदगी में कमर दर्द का अहसास सभी को होता है। जहाँ कुछ को यह दर्द कभी-कभी सताता है, वहीं कुछ इससे स्थायी रूप से परेशान रहते हैं, तो कुछ स्लिप डिस्क का शिकार होकर बिस्तर पकड़ लेते हैं। आज शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने अपने जीवन में कभी-न-कभी किसी दर्द को न झेला हो, लेकिन आधुनिक और विलासिता के कारण कमर-दर्द ने आज भयानक रूप ले लिया है। कमर दर्द की व्यापकता का सबसे बड़ा कारण गलत जीवन-शैली है, जिसमें सुधार करके हम इस तकलीफ़ से बच सकते हैं।

कमर-दर्द एक आम शिकायत है, जो कई कारणों से उत्पन्न हो सकती है। कमर-दर्द मुख्यतः मोटापा, अनियमित दिनचर्या, अचानक झुकने, वजन उठाने, झटका लगने, गलत तरीके से उठने-बैठने, गलत व्यायाम करने, तोंद निकलने, कुर्सी पर ठीक से न बैठने , मोटर ड्राइविंग सीट सही न होने से होता है। इसके अलावा छात्रों के भारी बस्ते या लैपटॉप टांगने, ऊँची एड़ी वाले जूते या चप्पल पहनने, लम्बे समय तक स्कूटर या मोटर-साइकिल चलाने, ऊबड़-खाबड़ रास्तों में ड्राइविंग से भी रीढ़ की डिस्क प्रभावित हो सकती है। इनके अतिरिक्त मानसिक तनाव भी कभी-कभी कमर-दर्द का कारण बन सकता है। यूं तो पुरुषों तथा महिलाओं में यह समान रूप से होता है। लेकिन इसकी औसत पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक है जो उनके लिए परेशानी का कारण बन जाता है। कमर-दर्द केवल बड़ी उम्र की महिलाओं का रोग नहीं है। किसी भी उम्र में यह हो कर सकता है। महिलाओं में कमर-दर्द का प्रमुख कारण मासिक-धर्म, मोटापा, गर्भाश्य का बाहर आना, गर्भकाल, अधिक श्रम, ऊँची एड़ी के चप्पल, सैंडिल, प्रसूतावस्था और व्यायाम में कमी का होना होता है।

कई लोग ऐसे हैं, जो वर्षों से भयानक कमर-दर्द झेल रहे हैं और एक तरह से विकलांग-जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जबकि ऐसे अनेक उपाय है जिनकी मदद से कमर-दर्द को नियंत्रण में रखकर सामान्य एवं सक्रिय जीवन का आनंद लिया जा सकता है। लेकिन जानकारी के अभाव में लोग कमर-दर्द के अभिशाप से मुक्त नहीं हो पाते हैं। कई लोग कमर-दर्द की तब तक अनदेखी करते रहते हैं जब तक कि स्थिति काबू से बाहर नहीं हो जाती। कमर-दर्द होने पर उसके इलाज में समय और धन खर्च करने से बेहतर यह है कि इससे बचने के उपायों पर अमल करके तथा सही जीवन-पद्धति अपनाकर कमर-दर्द को अपने से दूर ही रखा जाए।

रीढ़ की हड्डी अनेक वर्टिब्रा से मिलकर बनी होती है। ये वर्टिब्रा एक दूसरे के ऊपर सुनियोजित रूप से फिक्स होती हैं। इन वर्टिब्रा के बीच कुशन की तरह एक मुलायम डिस्क भी होती है, जो वर्टिब्रा को आपस में टकराने से रोकती है और एक तरह से शॉक एब्जार्वर का काम करती है। स्लिप वर्टिब्रा की शिकायत में वर्टिब्रा अस्थिर हो जाती है और जोड़ ढीले हो जाते हैं या हड्डियों के बीच का अंतर बढ़ जाता है। खड़े होने पर ये वर्टिब्रा खिसक जाती है। वर्टिब्रा की इस अस्थिरता के कारण दिमाग से आने वाली नसों पर दबाव पड़ता है। इस कारण कमर में दर्द और पैरों में कमज़ोरी या लड़खड़ाहट होती है।

मोटे लोगों को दुबले लोगों की तुलना में पीठ दर्द कुछ ज़्यादा ही होता है, वे स्वयं का वजन नहीं उठा पाते, तोंद का भार संभालने के लिए रीढ़ को भी झुकना पड़ता है, जिसकी वजह से पीठ दर्द होता है।

वही 'सियाटिका' की वजह से भी पीठ दर्द शुरू होता है। इसके अतिरिक्त रीढ़ की हड्डी, डिस्क और पीठ दर्द का बहुत गहरा संबंध है। यदि डिस्क कुछ इधर-उधर खिसक जाए, तो कमर अथवा पीठ के निचले हिस्से में दर्द होने लगता है। वैसे तो पीठ या कमर दर्द किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकता है, लेकिन 30 से 50 वर्ष की आयु वर्ग के लोग इससे अधिक प्रभावित होते हैं। वे महिलाएं और पुरूष इसके अधिक प्रभावित होते हैं, जिन्हें अपने काम की वजह से बार-बार उठना, बैठना, झुकना या सामान उतारना, रखना होता है। यदि स्लिप वर्टिब्रा के उपचार में शुरूआती दौर में लापरवाही बरती जाए तो कमर-दर्द पैरों तक चला जाता है।

कमर-दर्द के आरंभिक चरण में हम स्वयं अपनी बिमारी का इलाज करने लगते हैं और बाज़ार से दर्द-निवारक गोलियां खरीद कर खाते रहते हैं। इससे कुछ समय के लिए दर्द कम भी हो जाता है परंतु धीरे-धीरे दर्द निवारक गोलियों का असर भी समाप्त होने लगता हैं, नतीजा, कमर का दर्द बढ़ जाता है तथा धीरे-धीरे रोग पुराना हो जाता है।

क्या उपचार करें :

1. हीट रैप थेरेपी-यह कमर दर्द को दूर करने में सहायक होती है, बाज़ार में ऐसे कई उपकरण मिल जाते हैं, जिनसे दर्द के दौरान सिकाई की जाती है।

2. मसाज या मालिश : कमर दर्द को दूर करने का सबसे पुराना और कारगर इलाज। मालिश के दौरान शरीर से दर्द निवारक एंडोफ्रीन निकलता है, जो शरीर को आराम देने के अलावा दर्द से भी निज़ात दिलाता है।

3. हर्बल दवाएं : कमर दर्द दूर करने के लिए हर्बल दवाओं पर भी भरोसा किया जा सकता है।

4. दर्द निवारक गोलियां : हर दर्द निवारक गोली अलग तरह से असर करती है। यह दर्द के संकेतों को दिमाग तक पहुँचने ही नहीं देती। इस कारण दर्द का एहसास नहीं होता।

5. टेन्स मशीन : बैटरी से चलने वाले उपकरण ट्रांसक्यूटेनियस इलेक्ट्रीकल नर्व स्टिम्यूलेशन (टेन्स) को कमर में लगाया जाता है। इस इलेक्ट्रीकल पैड से नसों को उत्प्रेरित करके दर्द को ख़त्म किया जाता है।

सावधानियाँ :

कमर-दर्द की पीड़ा एक भुक्त-भोगी ही समझ सकता है। लेकिन इसके लिए हमारी अपनी कुछ आदतें भी जिम्मेदार हैं। यदि आप कमर-दर्द से बचना चाहते हैं तो इन बातों पर ध्यान दें। फ़ीजियोथैरेपिस्ट से परामर्श के बाद ही सुनिश्चित करें कि कमर में किस प्रकार का दर्द है तथा उसके लिए कौन-कौन से व्यायाम लाभदायक हैं।

- नियमित व्यायाम सर्वोत्तम है। व्यायाम उचित ढंग से करें। गलत ढंग से किया गया व्यायाम कमर दर्द को बढ़ा सकता है।
- अधिक समय तक स्टूल या कुर्सी पर झुककर न बैठें।
- शारीरिक श्रम से जी न चुराएँ। शारीरिक श्रम से मांसपेशियाँ पुष्ट होती हैं।
- एक सी मुद्रा में न तो अधिक देर तक बैठें और न ही खड़े रहें।
- किसी भी सामान को उठाने या रखने में जल्दबाजी न करें।
- भारी सामान को उठाकर रखने की बजाय धकेल कर रखें।
- ऊँची एड़ी के बजाय साधारण जूते-चप्पल पहनें।
- सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते समय सावधानी बरतें।
- कुर्सी पर बैठते समय पैर सीधे रखें न कि एक पर एक चढ़ाकर।
- सोते समय अधिक ऊँचा या मोटा तकिया न लगाएँ। साधारण तकिए का इस्तेमाल करें।
- यदि कहीं पर अधिक समय तक खड़ा रहना हो तो अपनी स्थिति को बदलते रहें।
- कमर के बल सीधे लेटें, चित्त सोएँ, पेट के बल न सोयें।
- दर्द की स्थिति में तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

अत्याधिक दर्द की स्थिति में सभी शारीरिक गतिविधियां बंद कर देनी चाहिए। आगे-पीछे झुकना नहीं चाहिए। बिस्तर पर सीधे लेट जाना चाहिए। कमर-दर्द की दो स्थितियाँ सबसे गंभीर मानी जा सकती हैं-'स्लिप डिस्क' और 'सियाटिका'। इन्हें गंभीरता से लेना चाहिए। स्लिप-डिस्क एक तरह से शरीर की यांत्रिक असफ़लता है। किसी व्यक्ति को कमर-दर्द के साथ पैरों में भी अगर दर्द होता है तो तुरंत इसका उपचार करा लेना चाहिए। दर्द असहनीय हो जाने पर डॉक्टर या फ़ीज़ियोथैरेपिस्ट के पास जाना ही समझदारी है। जाँच-पड़ताल के बाद ही डॉक्टर या फ़ीज़ियोथैरेपिस्ट यह निर्णय लेता है कि यह किस प्रकार का दर्द है तथा उसी के अनुसार उपचार करता है। अपनी सामान्य दिनचर्या में भी उपरोक्त व्यायाम नियमित रूप ये करते रहने तथा बताई गई सावधानियों पर अमल करने से कमर-दर्द जैसी बीमारी से बचा जा सकता है।

- प्र.का. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

मन-मंथन

मनजीत कौर

चाहे घर हो या दफ़्तर अगर समय-समय पर हम अपनी वस्तुओं की छटनी कर उन्हें सुव्यवस्थित ढंग से न रखें तो सब अस्त-व्यस्त हो जाता है। बीच-बीच में हमें अपनी अलमारियों, कपड़े, कागज़ों, फाईलों तथा अन्य सामान की छटंनी करनी पड़ती है ताकि ज़रूरत पड़ने पर आवश्यक वस्तु ढूँढने में परेशानी न हो। अगर हम पुरानी अनावश्यक वस्तुओं को निकालेंगे नहीं तो नई की जगह कैसी बनेगी, सुचारु रूप से रख-रखाव कैसे होगा?

ठीक इसी प्रकार से नियमित रूप से अंतर्मुखी हो, अपने मन का विश्लेषण करना बहुत आवश्यक है। जो भी अच्छा-बुरा हम देखते-सुनते, पढ़ते और अनुभव करते हैं, उसकी छाप हमारे दिमाग पर छपती चली जाती है। मन में अच्छी-बुरी सूचनाओं की परतें बनतीं चली जाती हैं। एकत्रित सूचनाओं के विशाल गुच्छे से बनते चले जाते हैं और समय पर हम वांछित सूचना ढूँढ ही नहीं पाते और 'नेटवर्क जैम' जैसी स्थिति हो जाती है।

उपरोक्त स्थिति से उबरने के लिये आवश्यक है कि नियमित रूप से हम अपने दिमाग में संचित सूचनाओं का अंतर्मुखी होकर विश्लेषण करें ताकि अच्छे नये विचारों की, अनुभवों की जगह बन सके। वरन् मस्तिष्क में पुराने, सड़े-गले विचारों की चक्की चलती रहती है और हमारी आंतरिक ऊर्जा क्षीण होती रहती है। कुछ अच्छा, कुछ नया कर पाने की चाहत इन सब में उलझ कर दब जाती है। अपने अंदर अपार शक्ति के भंडार के बावजूद हमारी सकारात्मक सोच काम ही नहीं कर पाती और अगर करती भी है तो हम उसे सक्रिय रूप नहीं दे पाते। हमारे स्वाभाविक गुण अपनी ही नकारात्मक सोच का शिकार बन क्षीण हो जाते हैं, हम तनावग्रस्त हों इस सब का कारण बाहर तलाशते हैं, दूसरों को, अपनी किस्मत का दोषी ठहराते हैं। निरंतर मानसिक तनाव का प्रभाव हमारी कार्यक्षमता, रिश्तों और शारीरिक तंत्रों पर पड़ता है।

हमने यह धारणा ही बना ली है कि तनावग्रस्त होना सामान्य बात है, पर सच तो यह है कि तनावमुक्त होना सामान्य है, रोग-मुक्त होना सामान्य है, हँसी-खुशी जीवन सामान्य हैं। तनाव मुक्त होने के लिये सबसे पहले अपनी सोच बदलनी होगी और उसके लिये अंतर्मुखी हो मानसिक कांट-छांट करनी होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे एक निपुण माली अपने पौधों की करता है। पुराने सड़े गले पत्तों की तरह अपने मनमुटाव, घृणा, जलन आदि को काट कर फेंक देना चाहिए क्योंकि यह भी हमारे तनाव व दुःख का कारण बनते हैं, हमारी उन्नति और विकास में बाधक होते हैं।

हर पल न जाने कितने विचार हमारे मन में उठते रहते हैं, लेकिन वे सभी हमारे जीवन को सुंदर और उत्कृष्ट नहीं बनाते। पर यह भी सच है कि हमारे जीवन की दशा हमारे विचारों द्वारा ही निर्धारित होती है। हमारी सोच का हमारी परिस्थितियों पर सीधा असर पड़ता है। जैसा हम विचार करते हैं, कामना करते हैं उसी प्रकार के वातावरण का निर्माण होने लगता है। मानसिक कांट-छांट से सोच में परिवर्तन हो एक हल्का और ताज़ापन आता है। स्वभाव में एक नवीनता और सहजता आती है जो जीवन के प्रति एक नयी दृष्टि, स्फूर्ति व साहस प्रदान करती है। अच्छी पावन सोच जीवन में सुख, समृद्धि, संतोष, आरोग्यता और दीर्घायु लेकर आती है। सुंदर विचारों का प्रवाह हमारे तन-मन को आनंदित करता है। हमारे शरीर की हर कोशिका को उत्साह और ऊर्जा से भर देता है। कमज़ोर विचारों की श्रृंखला के टूटने में अच्छे विचारों को पनपने की जगह मिलेगी और खुशी के फूल-खिलेंगे।

सहज मानसिक अवस्था को पाने के लिये प्रतिदिन कुछ समय अपने आप से वार्तालाप के लिये निश्चित करें। प्रातःकाल या सोने से पहले साक्षी हो अपने अंदर आते-जाते विचारों का अवलोकन करें। अच्छे विचारों को जमा करते जायें, बुरे विचारों को विलोप करते जाएं। कुछ दिनों में ही हम अपने अंदर और आस-पास सृजनात्मक बदलाव महसूस करेंगे। कटुता दूर हो मधुरता आयेगी, आपसी रिश्तों में सामंजस्य और सुधार होगा। जीवन में स्वीकार्यता, संतोष आयेगा, उत्तेजना कम हो अनुक्रियाशीलता बढ़ेगी। हम अपने आप से ऊपर उठ, आस-पास से खुशियाँ बटोरते और बिखेरते हुए, जीवन-पथ पर नए रास्ते बनाते जायेंगे। बस एक पहला कदम अंतर्मुखी होकर अपने अंदर कांट-छांट ज़रूरी है, प्रतिदिन मन-मंथन ज़रूरी है।

- आंचलिक कार्यालय-(।) नई दिल्ली

व्यवसायिक सिनेमा में दलित चेतना का उद्‌भव

हिमांशु राय

हिंदी सिनेमा आज भारतीय समाज का दर्पण है। नब्बे साल पहले शुरू हुआ व्यावसायिक सिनेमा आज अपने चरमोत्कर्ष पर है। आज सिनेमा में तकनीकी दृष्टि के अलावा कहानी, नृत्य, गीत-संगीत, चरित्र सभी में बदलाव देखे जा सकते हैं। लेकिन हिंदी व्यावसायिक सिनेमा का दलित विमर्श 'अछूत-कन्या' से आगे नहीं बढ़ पाया है।

निरंजनपाल द्वारा लिखी कहानी पर निर्माता देविका रानी ने 1936 में 'अछूत-कन्या' का निर्माण किया था। दलित युवती के रूप में फ़िल्म की नायिका वह स्वयं बनी और दादामुनि के रूप में विख्यात अभिनेता अशोक कुमार इस फ़िल्म के नायक थे। यह फ़िल्म अछूत युवती कस्तूरी (देविका रानी) और ब्राह्मण युवक प्रताप (अशोक कुमार) की प्रेम-कथा पर आधारित थी। 'अछूत-कन्या' के ज़माने में ही एक और फ़िल्म 'चंडीदास' बनी थी, जिसका नायक दलित लड़की के प्रेम के कारण अपने महंत पद के ताज को ठुकरा देता है।

हिंदी फ़िल्मकारों ने अंबेडकर के संघर्ष को दलितों द्वारा अपने मानवीय अधिकारों के लिए की जा रही जद्दोजहद को नज़रअंदाज करने के साथ ही सवर्णों द्वारा दलितों के प्रति अपना हृदय-परिवर्तन कर उनसे मानवीय व्यवहार करने की गाँधी जी की विचारधारा से भी असहमति दिखलाई और इसके फलस्वरूप सामाजिक समरसता का संदेश देने को 'अछूत-कन्या' का निर्माण हुआ और इसके बाद 'चंडीदास' दर्शकों को देखने को मिली। इन फ़िल्मों में दलितों के साथ मानवीय व्यवहार करने की बात तो थी, साथ ही उनसे वैवाहिक संबंधों को स्थापित करने के विचारों को भी प्रतिपादित किया गया था। इस तरह से ये फ़िल्में गाँधी जी के विचारों से भी आगे की बात करती हैं।

देखा जाए तो विमल राय द्वारा निर्मित 'सुजाता' को हम गाँधी जी की विचारधारा के बहुत क़रीब पाते हैं। इसमें सवर्णों का हृदय-परिवर्तन भी है और दलित युवती के साथ मानवीय व्यवहार को भी दर्शाया गया है और अंत में यह फ़िल्म अंतर्जातीय विवाह में परिणति हो जाती है। फ़िल्म की कहानी के अनुसार फ़िल्म की नायिका (नूतन) जो कि एक अछूत है और माता-पिता के न रहने के कारण सवर्णों के यहाँ पली और बढ़ी है। रेलवे इंजीनियर उपेंद्रनाथ (तरूण बोस) उनकी पत्नी चारू (सुलोचना) उसे पुत्री के समान पालते हैं। चारू उसे पुत्री नहीं, पुत्री जैसी मानती है और उसे बोझ समझती है। लेकिन एक कार-दुर्घटना में चारू की हालत ज़्यादा गंभीर हो जाती है और उसे ख़ून की ज़रूरत होती है। परिवार के सभी लोग ख़ून देने को तैयार हैं, लेकिन उनका ख़ून चारू के ख़ून से मेल नहीं खाता और अछूत युवती सुजाता (नूतन) का ख़ून ही चारू के ख़ून से मेल खाता है। सुजाता चारू को ख़ून देकर उसके प्राण बचा लेती है। यह बात चारू को बाद में पता चलती है तो उसे अपनी भूल का एहसास होता है। चारू तब पहली बार सुजाता को बेटी कहकर बुलाती है और अपना स्नेह उस पर उड़ेल देती है। फ़िल्म का सवर्ण नायक 'अधीर' (सुनील दत्त) जो पहले से ही उसे चाहता है, उससे विवाह कर लेता है।

'सुजाता' का निर्माण 1959 में हुआ था और 'अछूत-कन्या' को देविका रानी ने 1936 में बनाया था। इन दोनों फ़िल्मों के बीच 23 साल का अंतर था। इतने लंबे अंतराल में सामाजिक बदलाव भी हुए थे। अतः विषय-वस्तु के धरातल पर बदलाव ज़रूरी था, लेकिन उन्होंने 'सुजाता' में भी दलित युवती को नायिका और सवर्ण युवक को नायक बनाए रखा। उन्होंने जातीय व वंशानुगत श्रेष्ठता को बनाए रखा। यह फ़िल्म गांधीवादी विचारधारा का पोषण करती हुई भी जातीयता के दंभ से उभर नहीं पाई।

'अछूत-कन्या' में दलित युवती को सवर्ण नायक की नायिका के तौर पर ऐसे प्रस्तुत किया गया कि हिंदी के फ़िल्मकारों को अपनी जातिवादी मानसिकता को रेडिकल दिखलाने का सुनहरा फ़ार्मूला हाथ आ गया। इस पर भी मज़े की बात यह रही कि दलितों पर यह उपकार अलग से होता रहा कि वे सिनेमा के माध्यम से दलितों को सामाजिक समानता दिलवाने का आधार तैयार कर रहे हैं, जबकि तथ्य यह है कि वे घोर जातिवादी सिद्ध हुए हैं। 'अछूत-कन्या' से प्रारंभ हुआ हिंदी फ़िल्मकारों का जातिवादी नज़रिया 'चंडीदास', 'सुजाता' (दोनों 1959) और राजकुमार द्वारा अभिनीत 'चार दिल चार राहें' (1959) से होता हुआ राजेश खन्ना, टीना मुनीम और पद्मिनी कोल्हापुरे द्वारा अभिनीत फ़िल्म 'सौतन' (1980) और आर. के. बैनर तले राजीव कपूर द्वारा निर्देशित फ़िल्म 'प्रेम रोग' (1997) तक जारी रहा। 'प्रेम-ग्रंथ' में ऋषि कपूर की दलित नायिका

की भूमिका माधुरी दीक्षित ने अदा की थी।

वर्ण और जाति के प्रति जो संकीर्ण भावना ब्राह्मणवादी व्यवस्था में विद्यमान है, को जानने के लिए दिलीप कुमार और वैजयंती माला द्वारा अभिनीत 'गंगा-यमुना' के उस दृश्य को देखा जा सकता है जब दिलीप कुमार (गंगा) जमींदारों के शोषण से त्रस्त होकर डाकू बन जाता है और जंगल में छुपा होता है। उसके साथ उसकी प्रेमिका वैजयंती माला (धन्नो) होती है। दोनों शादी करना चाहते है। एक पंडित को वहाँ लाया जाता है। इस बीच गंगा (दिलीप) और पंडित जी के बीच जो संवाद हुए, जो इस प्रकार थे :

गंगा (दिलीप) : 'महाराज फटाफट हमारा लगन कराय देयो'

पंडित : 'क्यों नहीं बेटा! यह तो हमारा काम है, लड़की बता?'

गंगा (दिलीप) : 'वो है ना! धन्नो।'

पंडित : 'नहीं बेटा! मुझसे बुढ़ापे में यह ऐसा मत कराओ। मैं जनेऊ की कसम खाकर कहता हूँ, तुम्हारा इससे लगन नहीं हो सकता है।'

गंगा (दिलीप) : 'कहो क्यों नहीं हो सकता?'

पंडित : 'बेटा! तेरी जात उससे ऊँची है।'

बहुत से फ़िल्म निर्माता अपने साक्षात्कारों में अक्सर यह कहते हैं कि हम वही दिखाते हैं जो दर्शक चाहता है। लेकिन जातीय भेद-भाव के मामले में उनका यह कहना वास्तविक सत्य नहीं है। बीती सदी के आईने में हम हिंदी सिनेमा का जब अवलोकन करते हैं तो उसका संपूर्ण चेहरा जातिवादी चेहरे की भाव-भंगिमाओं में थोड़ा सा बदलाव कला (आर्ट) फ़िल्मों ने ज़रूर किया है। नई धारा का यह आंदोलन (सार्थक सिनेमा) सवर्ण नायिका और दलित नायक की जोड़ी बनाने की ओर तो अग्रसर नहीं हुआ परंतु उसने सवर्ण नायक और दलित नायिका की जोड़ी भी नहीं बनाई। गोविंद निहलानी की 'आक्रोश' दलितों और आदिवासियों पर होने वाले अत्याचारों को उजागर करती है, जबकि 'श्याम बेनेगल' की 'मंथन' दलितों में एकता का मंत्र फूँकती है तथा लोकतंत्र में उनके वोट के महत्व को रेखांकित करती है। ख़ैर, सार्थक सिनेमा पर चर्चा आगे के अंकों में की जायेगी।

- प्र.का. राजभाषा विभाग
नई दिल्ली

भारतीय रिज़र्व बैंक की अंतर बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2011-12

भारतीय रिज़र्व बैंक मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए अंतर-बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इसमें बैंकिंग विषयों के साथ-साथ सामाजिक महत्व के विषयों को भी शामिल किया गया है। तदनुसार, वर्ष 2011-12 की उक्त प्रतियोगिता के लिए निम्नानुसार तीन विषय रखे गए हैं :

- **भ्रष्टाचार : कारण और निवारण**
- **मीडिया का समाज पर प्रभाव**
- **बढ़ती हुई संवृद्धि दर और सामाजिक परिवर्तन**

इस प्रतियोगिता में सरकारी क्षेत्र के बैंकों (उनके द्वारा प्रायोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों सहित), सरकारी वित्तीय संस्थाओं तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के सभी कार्यरत कर्मचारी/अधिकारी (राजभाषा अधिकारियों/हिंदी अनुवादकों को छोड़कर) भाग ले सकते हैं। अपनी प्रविष्टि को 31 दिसम्बर 2011 तक निम्नलिखित पते पर भेजें तथा इसकी सूचना हमारे विभाग को भी दें।

उप महाप्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक
राजभाषा विभाग
गारमेंट हाउस, डॉ. एनी बेसेंट रोड, वरली
मुम्बई-400018

प्रतियोगिता के कुछ प्रमुख नियम :

1. केवल हिंदी में लिखे गए निबंध ही स्वीकार किए जाएंगे।
2. निबंध के लिए शब्दों की सीमा 3000 से 4000 तक रखी गई है।
3. निबंध हिंदी में कार्टो साइज कागज़ पर एक ओर टाइप किया हुआ होना चाहिए। हाथ से लिखे गए निबंध भी स्वीकार किए जाएंगे, बशर्ते वे साफ़-साफ़ लिखे गए हों और आसानी से पढ़े जा सकते हों।
4. प्रतियोगिता मातृभाषा के अनुसार (1) हिंदी भाषियों (2) मराठी, पंजाबी तथा गुजराती भाषियों तथा अन्य ग़ैर हिंदी भाषियों के लिए अलग-अलग आयोजित की जाएगी (3) प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।
5. प्रथम पुरस्कार की राशि 11000/- रु., द्वितीय पुरस्कार की राशि 7000/- रु. तथा तृतीय पुरस्कार की राशि 5000/- रु. है।

नोट : इस प्रतियोगिता संबंधी विस्तृत जानकारी हेतु दिनांक 21.07.2011 का रा.भा.वि. परिसंचारी पत्र सं. 1 अथवा भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाईट www.rbi.org.in/hindi/home.aspx देखें।

हमारे चित्रकार

कीर्तिका, सुपुत्री श्री मुरारी लाल
शाखा जसपाल कौर पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली।

निशांत, सुपुत्र श्री मुरारी लाल
शाखा जसपाल कौर पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली।

अनुष्का सिंह, सुपुत्री श्री चन्द्र मोहन सिंह
प्र.का. लेखा एवं लेखा विभाग, नई दिल्ली।

श्रेयसी सिंह, सुपुत्री श्री चन्द्र मोहन सिंह
प्र.का. लेखा एवं लेखा विभाग, नई दिल्ली।

सिदक प्रीत सिंह, सुपुत्र श्री अमरजीत सिंह मैदीरता
प्र.का. लेखा एवं लेखा विभाग, नई दिल्ली।

अमृतदीप सिंह, सुपुत्र श्री कुलविंदर सिंह
आं.का. गुरदासपुर।

मास्टर अमित, सुपुत्र श्री प्रेम चंद
शाखा रेलवे रोड, गाजियाबाद।

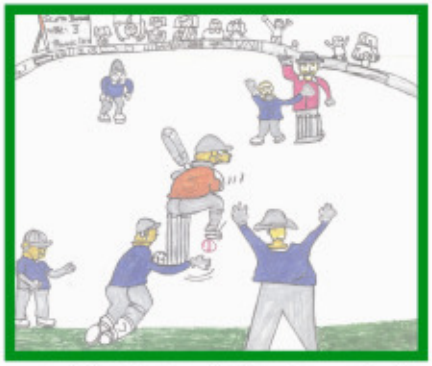

गुरलीन कौर, सुपुत्री श्री एन. एस. आनंद
प्र.का. सी.पी.पी. विभाग, नई दिल्ली।

श्रीमती शीतल सिंह
प्र.का. जोखिम प्रबंधन विभाग,
नई दिल्ली।

सेवा-निवृत्तियाँ

सेवा-निवृत महाप्रबंधक

श्री के. एस. सचदेवा

श्री दिनेश कुमार गुप्ता
(मुख्य सतर्कता अधिकारी)

श्री हरविन्द्र पाल सिंह

श्री गुरचरन सिंह

श्री मंजीत सिंह

श्री अमरजीत कोछड़

सेवा-निवृत्त उप महाप्रबंधक

श्री सुरिन्द्र सिंह	आंचलिक कार्यालय हरियाणा

सेवा-निवृत्त सहायक महाप्रबंधक

श्री सुरजीत सिंह	आंचलिक कार्यालय फरीदकोट
श्री सुरिन्द्र सिंह	स्थानीय प्रधान कार्यालय चण्डीगढ़
श्री रणजीत सिंह	अस्ति वसूली शाखा- I, नई दिल्ली
श्री मनिन्दर सिंह	प्रधान कार्यालय जोखिम प्रबंधन
श्री के. एस. बब्बर	प्रधान कार्यालय भविष्य निधि विभाग
श्री जसबीर सिंह चावला	शाखा स्टेशन रोड, जयपुर
श्री वरिन्द्रपाल सिंह	आंचलिक कार्यालय लुधियाना

सेवा-निवृत्त मुख्य प्रबंधक

श्री आर. सी. ग्रोवर	आंचलिक कार्यालय हरियाणा
श्री डी. एस. वाधवा	शाखा विक्रोली, मुम्बई
श्री अमरीक सिंह	शाखा कोर्ट रोड़, अमृतसर
श्री जे. एस. चौधरी	प्रधान कार्यालय क्रेडिट कार्ड विभाग
श्री तेजिन्दर पाल सिंह	आंचलिक निरीक्षणालय लखनऊ
श्री अमरजीत सिंह मदान	आई.बी. डी. नई दिल्ली
श्री मिथलेश्वर सिंह गुप्ता	प्रधान कार्यालय निरीक्षण विभाग
श्री हरपाल सिंह	शाखा संगरूर
श्री ज्योति सरूप पासी	आंचलिक कार्यालय जालंधर

सेवा-निवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

श्री गुरविन्दर सिंह	शाखा जी.आर.डी. सराय अमृतसर
श्री चरनजीत सिंह कांग	आंचलिक निरीक्षणालय चण्डीगढ़
श्री जसजीत सिंह ग्रेवाल	शाखा राजबाहा रोड़, पटियाला
श्री हरविन्द्रजीत सिंह	आंचलिक कार्यालय फरीदकोट
श्री कुलवंत सिंह	शाखा रणजीत एवेन्यू, अमृतसर
श्री कवलजीत सिंह	शाखा स्वर्ण मन्दिर, अमृतसर
श्री सुरिन्दर वीर सिंह	आंचलिक कार्यालय लुधियाना
श्री इन्द्रपाल सिंह	शाखा डैहलों
श्री हरचरन सिंह	आंचलिक कार्यालय मुम्बई
श्री परमजीत सिंह	आंचलिक निरीक्षणालय, नई दिल्ली
श्री अजीत सिंह बल	आंचलिक कार्यालय पटियाला
श्री विनोद कुमार धवन	शाखा जी.टी. रोड, पानीपत
श्री प्रेम प्रसाद शर्मा	शाखा आई.बी.डी. आगरा
श्री कपिल देव शर्मा	प्रधान कार्यालय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
श्री जसवंत सिंह	शाखा गांधी रोड, देहरादून
श्री कुलदीप सिंह	आंचलिक निरीक्षणालय चण्डीगढ़
श्री एच. एस. खनूजा	आंचलिक निरीक्षणालय मुम्बई
श्री कंवर इंद्र सिंह	आर. सी. लुधियाना
श्री सुखिन्दर सिंह सोढ़ी	आंचलिक निरीक्षणालय चण्डीगढ़
श्री जीबन कुमार गोस्वामी	प्रधान कार्यालय मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग
श्री पुरषोत्तम सिंह मेहता	शाखा एम. ब्लॉक कनॉट सर्कस, नई दिल्ली
श्री अरविन्द्र पाल सिंह	शाखा स्वर्ण मंदिर, अमृतसर
श्री एच. के. एल. तलवार	आंचलिक निरीक्षणालय चण्डीगढ़
श्री जय भगवंत गुप्ता	शाखा अजरोंडा
श्री पृथपाल सिंह मल्होत्रा	प्रधान कार्यालय योजना एवं विकास विभाग

पी.एस.बी. परिवार अपने सेवानिवृत्त साथियों के स्वास्थ्य एवं सुखमय जीवन की कामना करता है।